देश विदेश की लोक कथाऐं — पहेलियॉ ः

बूझ पहेली बूझ

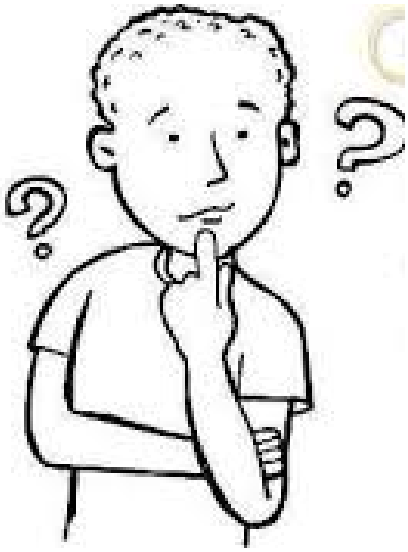

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title: Boojh Paheli Boojh (Riddles in Folktales)
Cover Page picture: Face expressing thinking
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2017

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

बूझ पहेली बूझ 5

1 मिलान के सौदागर का बेटा 7

2 पहेलियों वाली राजकुमारी 39

3 एक बड़े साइज़ का आदमी का शिष्य 55

4 सुलतान की बेटी 62

5 गुलाम्बरा और सुलाम्बरा 79

6 एक राजा और साधु 93

7 एक पैसे में सब 98

8 पहेली 103

9 चार राजकुमार जो पत्थर बन गये 107

10 मछली हँसी क्यों 118

11 एक विद्यार्थी की कहानी 130

12 एक राजा और सेब 136

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1500 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
दिसम्बर 2018

बूझ पहेली बूझ

पहेलियॉ सामाजिक जीवन का एक अटूट हिस्सा हैं। बचपन से ही बच्चे आपस में एक दूसरे से पहेलियॉ पूछना शुरू कर देते हैं। उनके माता पिता भी उनको यह आदत बचपन से ही डालते हैं। इससे बच्चों का दिमाग तेज़ होता है। तुम लोगों ने भी आपस में पहेलियॉ पूछी होंगी।

क्योंकि पहेलियॉ लोक साहित्य का एक हिस्सा है तो ये जगह जगह की लोक कथाओं में भी पाया जाता है। यहॉ हम कुछ ऐसी लोक कथाऐं दे रहे हैं जिनमें पहेलियॉ बूझी गयी हैं। जब तुम इन कथाओं को पढ़ोगे तो तुमको लगेगा कि ये पहेलियॉ वैसी नहीं है जैसी कि तुमने अपने बचपन में पूछी या बूझी होंगी।

इनमें सामान्यतया सभी कथाओं में पहेलियॉ बनायी गयीं है या फिर कहीं वह केवल एक सवाल है पहेली नहीं पर उसको पहेली का केवल नाम दे दिया गया है क्योंकि काम होने के लिये उस सवाल का जवाब देना जरूरी है।

ये लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये अलग अलग देशों की लोक कथाओं से ली हैं। देखो कि दूसरे देशों में कैसी पहेली पूछी जाती हैं।

1 मिलान के सौदागर का बेटा[1]

पहेली बूझने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार इटली देश के मिलान शहर में एक सौदागर अपने परिवार के साथ रहता था। उस सौदागर के परिवार में उसकी पत्नी और दो बेटे थे। अपने दोनों बेटों में से उसको अपना बड़ा बेटा बहुत प्यारा था।

ऐसा तो नहीं था कि वह अपने छोटे बेटे को प्यार नहीं करता था पर वह क्योंकि छोटा था इसलिये उसको अभी भी वह बच्चा ही समझता था और इसी लिये उसकी तरफ ध्यान भी थोड़ा कम ही देता था।

धीरे धीरे सौदागर अमीर होता जा रहा था और अब वह केवल वही सौदे करता था जिनमें उसको काफी ज़्यादा फायदा होता था। और ऐसे ही एक बड़े फायदे के लिये वह अब फ्रांस जा रहा था।

वहॉ उसको कुछ खास चीज़ें बनवानी थीं जिसके लिये वह सोचता था कि वे उसके लिये बहुत फायदेमन्द रहेंगी।

[1] The Son of the Merchant From Milan (Story No 62) – a folktale from Italy from its Montale Pistoiese area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

उसका बड़ा लड़का अपने पिता के साथ जा रहा था। यह देख कर उसका छोटा लड़का मैनीचीनो[2] भी उसके साथ जाने की जिद करने लगा।

वह बोला — "पिता जी, मुझे भी अपने साथ ले चलिये न। मैं आपके साथ आपका अच्छा बेटा बन कर रहूँगा। बल्कि आपकी सहायता भी करूँगा। मैं यहाँ मिलान में अकेला नहीं रहूँगा।"

सौदागर अपने उस बेटे को अपने साथ ले जा कर परेशान होना नहीं चाहता था इसलिये उसने उसको धमकी दी कि अगर वह चुप नहीं हुआ तो वह उसको थप्पड़ मारेगा।

जब सौदागर और उसके बेटे का जाने का समय आया तो सौदागर और उसके बड़े बेटे ने अपना सामान बाहर निकाल कर गाड़ी में रखा और फिर वे दोनों खुद भी गाड़ी में चढ़ गये।

रात का समय था सो किसी को दिखायी नहीं दिया कि मैनीचीनो उनकी गाड़ी में लगी पीछे वाली सीढ़ी पर बैठ गया और इस तरह छिप कर वह उनके साथ ही चल दिया।

जब गाड़ी पहली जगह रुकी जहाँ उसको घोड़े बदलने थे तो मैनीचीनो उस सीढ़ी पर से हट गया ताकि वे लोग उसको देख न लें और जब तक वह गाड़ी दोबारा चलने के लिये तैयार हो तब तक वह उसका इन्तजार करता रहा।

[2] Menichino – name of the younger son

जब वह गाड़ी दोबारा चली तो वह फिर वहीं बैठ गया और फिर दूसरी रुकने की जगह तक पहुँच गया। दूसरी रुकने की जगह तक पहुँचते पहुँचते दिन निकल आया था सो वह सड़क के एक पास वाले मोड़ के पीछे छिप गया।

पर इस बार जब गाड़ी चली तो इतनी अचानक और तेज़ चली कि वह जल्दी से कूद कर आने के बावजूद उसकी सीढ़ी पर नहीं बैठ सका और गाड़ी चली गयी। वह लड़का सड़क के बीच में वहीं का वहीं खड़ा रह गया।

अपने आपको एक नयी जगह में अकेला पा कर, बिना पैसे के, भूखा, वह लड़का वहाँ रुआँसा सा हो रहा था कि उसने अपने आपको सँभाला और इधर उधर देखने के लिये घूमने लगा।

वहीं पास में सड़क के किनारे एक बुढ़िया बैठी थी। उसने उस बच्चे को इस तरह अकेला सा खड़ा देखा तो उससे पूछा — "बेटा, तुम यहाँ अकेले क्या कर रहे हो? कहीं जा रहे हो? या खो गये हो?"

मैनीचीनो बोला — "माँ जी मैं यहाँ खो गया हूँ। मैं अपने पिता और बड़े भाई के साथ जा रहा था और गाड़ी मुझे यहाँ से बिना लिये ही चली गयी और मैं यहाँ अकेला रह गया। मुझे अपने घर का रास्ता भी नहीं मालूम कि मैं अपनी माँ के पास पहुँच जाऊँ।

पर मेरे लिये तो घर में भी कोई काम नहीं है क्योंकि मैं तो दुनियॉ में बाहर घूमना चाहता हूॅ और अपनी किस्मत बनाना चाहता हूॅ। और मेरे पिता ने तो अब मुझे सड़क पर ही छोड़ दिया है।"

वह कुछ सोचता रहा फिर बोला — "असल में उनको तो पता ही नहीं था कि मैं उनके साथ था। मैं तो गाड़ी के पीछे वाली सीढ़ी पर छिप कर बैठा हुआ था। हमको फ्रांस जाना था।"

बुढ़िया बोली — "अच्छा हुआ। तुम सच बोल रहे हो यह तो और भी अच्छी बात है। मैं एक परी हूॅ और मैं तुम्हारी कहानी जानती हूॅ। अगर तुम अपनी किस्मत बनाना चाहते हो तो मैं तुम्हें बता सकती हूॅ कि तुम क्या करो, अगर तुम होशियार हो और दूसरों की इज़्ज़त करते हो तो।"

मैनीचीनो बोला — "मैं मानता हूॅ कि मैं छोटा हूॅ पर मुझे लगता नहीं कि **14** साल का हो कर भी मैं इतना बेवकूफ हूॅ इसलिये आप मुझ पर विश्वास कर सकती हैं। मैं वह सब करूॅगा जो आप मुझसे करने को कहेंगी। अगर आप मुझसे खुश हैं तो मुझे बताइये कि मुझे क्या करना है।"

बुढ़िया परी बोली — "तुम बहुत अच्छे लड़के हो। तो सुनो पुर्तगाल के राजा की एक बहुत ही होशियार बेटी है। जो कोई भी पहेली बूझ सकती है। राजा ने यह घोषणा कर रखी है कि वह अपनी बेटी की शादी उस आदमी से करेगा जो उसकी बेटी से कोई ऐसी पहेली पूछेगा जिसे वह नहीं बूझ पायेगी और हार जायेगी।

तुम मुझे एक होशियार लड़के लगते हो इसलिये तुम एक पहेली खोजो जिसको वह बूझ न सके और बस तुम्हारी किस्मत बन जायेगी।"

मैनीचीनो बोला — "वह तो ठीक है मॉ जी पर आप क्या सोचती हैं कि मै क्या कोई ऐसी पहेली बना सकता हूँ जो इतनी होशियार लड़की को भी चक्कर में डाल दे? मेरे ख्याल से तो केवल चतुर लोग ही ऐसा कर सकते हैं, मेरे जैसे अनपढ़ बच्चे नहीं।"

बुढ़िया परी बोली — "मैं तो तुमको सही रास्ते पर ला रही थी। तुम होशियार बच्चे हो। तुम अपने आप सब कुछ सॅभाल लोगे।

मैं तुमको यह कुत्ता देती हूँ। इसका नाम बैलो[3] है। तुम्हारी पहेली इसी से पैदा होगी। इसको साथ ले जाओ और जा कर राजकुमारी को जीत कर लाओ।"

[3] Bello – the name of the dog

मैनीचीनो बोला — "बहुत अच्छा मॉ जी। अगर आप ऐसा कहती हैं तो मैं आपका विश्वास कर लेता हूँ। आपका बहुत बहुत धन्यवाद। आपकी इतनी मेहरबानी ही मेरे लिये काफी है।"

उसने बुढ़िया परी को विदा कहा, कुत्ते को साथ लिया और आगे चल दिया। हालॉकि वह बुढ़िया के कहने से बहुत ज़्यादा सन्तुष्ट नहीं था पर फिर भी इस समय उसके पास इसके अलावा कोई और चारा भी नहीं था सो वह वहॉ से चल दिया।

शाम होते होते वह खेत पर बने एक मकान[4] में आ गया और वहॉ जा कर रात के लिये खाना और रहने की जगह मॉगी।

उस स्त्री ने जिसने घर का दरवाजा खोला था उस लड़के से पूछा — "अरे तुम यहॉ अकेले रात को क्या कर रहे हो? केवल एक कुत्ता ही तुम्हारे साथ है। क्या तुम्हारे माता पिता नहीं हैं?"

मैनीचीनो बोला — "मेरे पिता और बड़ा भाई फ्रांस जा रहे थे। मैं भी फ्रांस जाना चाहता था पर वे मुझको अपने साथ नहीं ले जा रहे थे इसलिये मैं उनकी गाड़ी के पीछे छिप कर बैठ गया।

एक बार वह गाड़ी रुकी तो मैं उतर गया पर फिर जब गाड़ी चली तो मैं रह गया और मेरे पिता जी बिना मुझे लिये ही चले गये।

अब मैं एक पहेली के साथ पुर्तगाल के राजा की बेटी को लेने जा रहा हूँ। यह कुत्ता जो एक परी ने मुझे दिया है मेरे लिये पहेली बनायेगा और इस तरह से मैं राजा की बेटी से शादी कर पाऊँगा।"

[4] Farm House

वह स्त्री बहुत ही बुरी थी उसने सोचा कि अगर यह कुत्ता पहेली बनाता है तो मैं इस कुत्ते को चुरा लेती हूँ और अपने बेटे को इस कुत्ते को ले कर पुर्तगाल भेज देती हूँ तो बजाय इसके मेरे बेटे की शादी पुर्तगाल के राजा की बेटी से हो जायेगी। ऐसा सोच कर उसने उस लड़के को मारने का प्लान बनाया।

उसने उस लड़के के लिये एक जहरीली पेस्ट्री तैयार की और उस लड़के से कहा — "हम इसको पिज़ा[5] कहते हैं। इसे मैंने खास करके तुम्हारे लिये ही बनाया है।

मुझे अफसोस है कि तुम यहाँ रात को नहीं रह सकते क्योंकि मेरे पति अजनबियों को रात को घर में नहीं ठहराते। पर पास के जंगल में हमारा एक केबिन[6] है तुम वहाँ जा कर रात को सो सकते हो।

जैसे ही तुम जंगल में घुसोगे वैसे ही तुमको वह दिखायी दे जायेगा। और यह पिज़ा साथ ले जाओ इसे केबिन में जा कर खा लेना। मैं सुबह आ कर तुम्हें जगा दूँगी और तुम्हारे लिये दूध भी लेती आऊँगी।"

[5] Pizza – an Italian dish – very popular in Italy. See its picture above.
[6] Cabin – a house or a single room made of wooden logs. See its picture above

मैनीचीनो ने उसे धन्यवाद दिया और पिज़ा ले कर केबिन की तरफ चल दिया। पर कुत्ते को शायद उस लड़के की बजाय ज़्यादा भूख लगी थी सो मैनीचीनो ने पेस्ट्री का एक टुकड़ा तोड़ा और उसे कुत्ते की तरफ फेंक दिया।

बैलो ने वह टुकड़ा हवा में ही पकड़ लिया और खा लिया। उसे खाते ही वह कॉपने लगा और नीचे गिर कर जमीन पर लोटने लगा। उसके पंजे ऊपर की तरफ हो गये और वह मर गया।

उसको मरा देख कर मैनीचीनो का मुँह तो खुला का खुला रह गया। उसने बाकी की बची हुई पेस्ट्री फेंक दी। पर फिर अचानक बोला — "ओह तो पहेली यहाँ से शुरू होती है —

पिज़ा ने बैलो को मारा
जबकि बैलो ने मैनोचीनो को बचाया।

बस अब मुझे इस पहेली के बचे हुए हिस्से का पता करना है।

उसी समय वहाँ से तीन कौए उड़े तो उनको वहाँ एक मरा हुआ कुत्ता दिखायी दे गया। बस वे नीचे उतरे और उन्होंने उस कुत्ते के मरे हुए शरीर को खाना शुरू कर दिया। कुछ पल बाद वे तीनों कौए भी मर गये।

मैनीचीनो बोला — "तो इसकी तीसरी लाइन यह है – "एक मरा हुआ तीन को मारता है।"

उसने तीनों कौओं को उस कुत्ते की रस्सी के साथ बॉधा और उनको कन्धे पर लटका कर ले चला। वह अभी कुछ ही दूर गया था कि अचानक जंगल में से हथियारबन्द डाकुओं का एक समूह निकल पड़ा।

वे सब डाकू भूखे थे सो उन्होंने मैनीचीनो से पूछा — "खाने के लिये तुम्हारे पास कुछ है क्या?"

मैनीचीनो उनसे डरा नहीं। उसने जवाब दिया — "मेरे पास तीन चिड़ियें हैं भूनने के लिये।"

डाकू बोले — "उन्हें हमें दे दो।"

मैनीचीनो ने वे तीनों कौए उन डाकुओं को दे दिये और वे डाकू उन तीनों कौओं को ले कर आगे चल दिये। मैनीचीनो यह देखने के लिये एक पेड़ के पीछे छिप गया कि देखें अब क्या होता है।

उसने देखा कि उन डाकुओं ने उन तीनों कौओं को भूना और खाने लगे। कुछ पल में वे भी मर गये।

इस पर मैनीचीनो ने अपनी पहेली में एक लाइन और जोड़ी —

पिज़ा ने बैलो को मारा, जबकि बैलो ने मैनीचीनो को बचाया
एक मरा हुआ तीन को मारता है, और फिर तीन छह को मारते हैं

डाकुओं को खाना खाते देख कर उसको अपनी भूख की याद आ गयी। उसने उन डाकुओं में से एक डाकू की बन्दूक उठायी और पेड़ पर बैठी एक चिड़िया मार दी।

वह चिड़िया अपने घोंसले में बैठी थी। सो इत्तफाक से उसकी गोली बजाय चिड़िया के लगने के उसके घोंसले में लग गयी और उसका घोंसला नीचे गिर पड़ा।

उस घोंसले में उस चिड़िया के अंडे थे सो घोंसले के नीचे गिरते ही वे अंडे भी फूट गये। उन अंडों में से चिड़िया के छोटे छोटे बच्चे निकल पड़े। उन बच्चों के तो अभी पंख भी नहीं निकले थे।

उसने उन बच्चों को उसी आग में रख दिया जिसमें उन डाकुओं ने जहरीले कौए भूने थे और आग जलाने के लिये उसने एक किताब के कागज फाड़े जो उसको एक डाकू के पास से मिल गयी थी। उसने उन चिड़ियों के बच्चों को खाया और फिर वह पेड़ पर चढ़ गया और सो गया।

अब उसकी पहेली पूरी हो गयी थी। अगले दिन उसने अपनी पुर्तगाल की यात्रा शुरू की।

मैनीचीनो पुर्तगाल में

जब मैनीचीनो पुर्तगाल के राजा के महल में पहुँचा तो वह तुरन्त ही राजकुमारी के पास अपनी पहेली पूछने के लिये अपने उन्हीं मैले कपड़ों में चला गया जिनमें वह इतनी लम्बी यात्रा करके आया था।

राजकुमारी उसको देखते ही हँस पड़ी और बोली — "यह मैले कपड़ों वाला मुझसे पहेली पूछने आया है? मेरा पति बनने की यह सोच भी कैसे सका?"

मैनीचीनो बोला — "पहले मेरी पहेली तो सुन लो राजकुमारी जी, उसके बाद ही कुछ कहना क्योंकि आपके पिता की घोषणा के अनुसार सब बराबर हैं। किसी में कोई भेदभाव नहीं है।"

राजकुमारी बोली — "यह तो ठीक है। तुमने ठीक ही कहा पर याद रखो कि तुम्हारे पास अभी भी समय है कि तुम मुझसे पहेली पूछने से पहले ही रुक जाओ और पिटाई से बच जाओ।

मैनीचीनो ने एक पल के लिये सोचा फिर उसे उस परी के शब्द ध्यान आये और उसने हिम्मत बटोर कर कहा — "मेरी पहेली है —

पिज़ा ने बैलो को मारा, जबकि बैलो ने मैनीचीनो को बचाया
एक मरा हुआ तीन को मारता है, और फिर तीन छह को मारते हैं
मैंने उन पर बन्दूक चलायी जिनको मैंने देखा पर उनको मारा जिनको मैंने नहीं देखा

जो अभी पैदा भी नहीं हुए थे मैंने उनका मॉस खाया
जिनको शब्दों और शब्दों और शब्दों के साथ पकाया
और फिर मैं न तो धरती पर और न आसमान में सोया

सो अब बताओ मेरी राजकुमारी। बूझो मेरी पहेली।"

जैसे ही मैनीचीनो ने अपनी पहेली खत्म की राजकुमारी चिल्लायी — "ओह यह तो बड़ी आसान पहेली है। पिज़ा तुम्हारे भाइयों या दोस्तों में से कोई एक है और उसने बैलो को मारा क्योंकि बैलो तुम्हारा दुश्मन है। बैलो मरते मरते तुमको बचा जाता है क्योंकि इस तरह से वह पिज़ा तुमको फिर कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

यहाँ तक तो ठीक है न? पर मरने से पहले बैलो ने तीन दूसरे लोगों को मार दिया और वो तीन, और वो तीन।"

इतना कह कर उसने अपनी कोहनी अपने घुटनों पर रख ली और अपनी ठोड़ी अपने हाथों में।

फिर अपनी गरदन के पीछे की तरफ खुजाती हुई बोली — "बिना पैदा हुआ मॉस, क्या उसको तुमने वाकई शब्दों के साथ भूना? इसका मतलब है अगर मैं इस पहेली को हल कर पायी... ।"

पर अन्त में वह हार मान गयी और बोली — "तुमने मुझे पा लिया ओ अजनबी। यह तो बड़ी नामुमकिन सी पहेली है। इसे तो तुमको ही मुझे समझाना पड़ेगा।"

तब मैनीचीनो ने उसे अपनी सारी कहानी सुनायी, शुरू से ले कर आखीर तक, और कहानी सुना कर उससे अपना शाही वायदा निभाने के लिये कहा।

राजकुमारी बोली — "तुम ठीक कहते हो। मैं इस बात को मना नहीं कर सकती कि मैं हार गयी हूँ पर मेरी कोई इच्छा नहीं है कि मैं तुमसे शादी करूँ। सो अगर तुम मेरे पिता से मुझसे शादी करने की बजाय कोई और समझौता कर लो तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

मैनीचीनो बोला — "अगर उस समझौते की नयी शर्तें मुझे मंजूर हुईं तब तो मैं राजी हो जाऊँगा नहीं तो नहीं। क्योंकि याद रखो इस दुनियॉ में मैं केवल इसलिये निकला हूँ ताकि मैं अपनी किस्मत बना

सकूँ। और अगर मैं राजकुमारी से शादी न कर सका तो फिर मुझे उसी कीमत का कोई और इनाम चाहिये।"

राजकुमारी बोली — "उसकी तुम चिन्ता न करो। तुमको उससे कहीं ज़्यादा मिल जायेगा। तुम एक करोड़पति हो जाओगे और अपनी हर इच्छा पूरी कर पाओगे।

तुम उस समझौते से इसकी तुलना करो कि अगर एक राजकुमारी जो तुम्हारी ज़िन्दगी का कोई हिस्सा नहीं बनना चाहती, अगर और अगर तुम उससे शादी कर भी लो तो शादी करके तुम्हें कैसा महसूस होगा?

वह हमेशा तुमसे नाखुश रहेगी और तुमसे चिढ़ी चिढ़ी रहेगी। क्या तुम इस तरह से उसके साथ खुश रह पाओगे?

और क्या तुम इस बात का भी अन्दाजा लगा सकते हो कि मैं तुम्हें उस समझौते में क्या देने वाली हूँ – मैं देने वाली हूँ तुमको फूलों वाले पहाड़ के जादूगर का भेद[7]। जब तुम्हारे पास इस जादूगर का भेद होगा तो तुम्हारी सारी चिन्ताऐं दूर हो जायेंगी।"

"और वह भेद है कहाँ?"

"यह तुमको उससे खुद जा कर लेना पड़ेगा। बस तुम उसको मेरा नाम बताना तो वह तुमको सब बता देगा।"

मैनीचीनो सोच में पड़ गया कि वह इस निश्चित चीज़ को उस अनिश्चित चीज़ के लिये छोड़े या नहीं। पर राजकुमारी का पति

[7] The Secret of the Sorcerer of Flower Mountain

बनने में उसे खुशी से ज़्यादा डर था क्योंकि राजकुमारी उससे शादी करना नहीं चाहती थी इसलिये उसने उससे उस फूलों वाले पहाड़ का भेद जानना ही ज़्यादा ठीक समझा सो उसने उसका पता पूछा। राजकुमारी ने उसे उसका पता बता दिया।

मैनीचीनो फूलों वाले पहाड़ पर

फूलों वाला पहाड़ एक बहुत बड़ा पहाड़ था जिस पर चढ़ना नामुमकिन सा था। मैनीचीनो उस पहाड़ की चोटी पर पहुँचने के लिये चल दिया। उस पहाड़ की चोटी पर एक किला बना हुआ था और उस किले के चारों तरफ एक बागीचा था।

लोगों ने वहाँ इतने ऊँचे पर वह किला कैसे बनाया होगा यह भी एक भेद की बात थी पर किसी तरह से मैनीचीनो उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच गया और जा कर उस किले का दरवाजा खटखटाया।

कई बहुत बड़े साइज़ के लोगों[8] ने मिल कर उस किले का दरवाजा खोला। वे लोग न तो आदमी ही थे और न ही औरत। और देखने में भी ऐसे थे कि डर भी उनको देख कर डर जाये।

मैनीचीनो को उनको देख कर लगा कि वे तो कुछ भी नहीं थे अभी तो उसके साथ इससे भी ज़्यादा बुरा कुछ होने वाला है पर

[8] Translated for the word “Giants”

उसने उनकी तरफ शान्ति से देखा और उनसे जादूगर से मिलवाने के लिये कहा।

जादूगर का नौकर जो एक बहुत बड़े साइज़ का आदमी था आगे आया और बोला — "लड़के, तुम्हारे अन्दर हिम्मत की कमी नहीं है इस बात का तो हमको यकीन है पर अच्छा हो अगर तुम हमारे मालिक से मिलने की कोशिश न करो तो।

क्योंकि ईसाई लोग उसकी कमजोरी हैं और वह उनको कच्चा ही चबा जाता है। और हमको लगता है कि तुम ईसाई हो। इसलिये तुम जान बूझ कर अपनी जान के दुश्मन क्यों बनते हो?"

मैनीचीनो बोला — "होने दो उसको जैसा भी है वह। पर मुझे तो उससे बात करनी ही है सो मेहरबानी करके उसको यह बता दो कि मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

यह सुन कर वे उस जादूगर को यह बताने के लिये चले गये कि एक लड़का उससे मिलना चाहता था। जादूगर एक बहुत ही कीमती कालीन और उसके ऊपर रखे गद्दों के ऊपर बैठा था।

जब उसने यह सुना कि एक लड़का उससे मिलने के लिये आ रहा है तो वह अपने मन में कुछ सोचने लगा – "यह तो ईसाई कौर है – नाश्ते के लिये स्वादिष्ट और ताजा।" उसने कहा कि उसको तुरन्त ही अन्दर ले आओ।

तभी मैनीचीनो अन्दर घुसा। जादूगर ने उससे पूछा — "तुम कौन हो और क्या चाहते हो?"

मैनीचीनो बोला — "आप परेशान न हों। मैं आपके पास किसी बुरे मतलब से नहीं आया हूँ। मैं एक बहुत ही गरीब लड़का हूँ और अपनी किस्मत बनाने निकला हूँ और उन्होंने मुझे आपके पास भेज दिया है क्योंकि आप गरीबों और बदकिस्मतों को बहुत दान देते हैं।"

यह सुन कर जादूगर बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। उसकी हँसी से उसका पूरा महल काँप गया। वह बोला — "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुमको यहाँ किसने भेजा है?"

इस पर मैनीचीनो ने उसको अपनी सारी कहानी सुना दी। जादूगर अपनी कोहनी एक तरफ रख कर उस पर झुक गया और उस लड़के को अच्छी तरह देखने लगा।

फिर बोला — "तुम वाकई एक बहुत ही हिम्मत वाले लड़के हो और तुम सच भी बोलते हो तो तुमको इसका इनाम तो तुम्हें मिलना ही चाहिये।

मेरा भेद है यह जादुई छड़ी। यह मैं तुमको देता हूँ। पर अगर कभी यह गलत जगह रखी गयी या खो गयी तो फिर बस भगवान ही तुम्हारी सहायता करे।

तुम जब कभी भी इसे जमीन पर मारोगे और अपनी इच्छा बोलोगे तो वह तुरन्त ही पूरी हो जायेगी। यह लो और अब खुशी खुशी घर चले जाओ।"

मैनीचीनो ने जादूगर से उसकी वह जादुई छड़ी ली और फूलों के पहाड़ से नीचे चल दिया। वह सोचता चला आ रहा था कि अब बस अच्छा तो यही होगा कि वह अपने घर वापस लौट जाये, एक भले आदमी जैसे कपड़े पहने और घर जा कर देखे कि उसके पिता और भाई अभी भी उसको याद करते हैं या नहीं। सो वह अपने घर चल दिया।

मैनीचीनो वापस अपने घर

रास्ते में ही मैनीचीनो ने अपने मन में सोचा मैं अपनी जादू की छड़ी का पहला इम्तिहान यहीं लेता हूँ। उसने अपनी जादू की छड़ी जमीन पर मारी तो एक बहुत धीमी सी पतली सी आवाज सुनायी दी "मालिक, हुकुम।"

मैनीचीनो बोला — "मुझे चार घोड़े वाली एक बग्घी और भले आदमियों के पहनने वाले कपड़े चाहिये।"

और उसके सामने एक बहुत सुन्दर बग्घी खड़ी थी जिसमें चार शानदार घोड़े जुते हुए थे। कुछ नौकर उसको कपड़े पहनाने और तैयार करने के लिये आये। उन्होंने उसको बिल्कुल नये फैशन के कपड़े पहना दिये।

यह सब कुछ जादू का था। वे घोड़े भी जादू के थे। तैयार हो कर जैसे ही मैनीचीनो गाड़ी में बैठा तो वे घोड़े हवा से बातें करते

हुए मिलान की तरफ चल दिये। वे वहॉ पहुॅचने तक बीच में एक बार भी नहीं रुके।

वह जब मिलान पहुॅचा तो उसको पता चला कि उसके माता पिता तो वहॉ से कहीं और चले गये हैं। उसके पिता जिस काम के लिये फ्रांस गये थे उससे तो वे बजाय अमीर हो कर लौटने के काफी पैसा खो कर लौटे सो वे अपना मकान आदि बेच कर शहर के बाहर एक बहुत छोटे से घर में किराये पर रहने लगे थे।

मैनीचीनो तब अपने पिता के नये घर में गया तो इतनी बढ़िया बग्घी में से उसको उतरता देख कर तो उसके माता पिता उसको देखते के देखते ही रह गये।

उसने अपने माता पिता को उस जादू की छड़ी के बारे में कुछ नहीं बताया बल्कि कहा कि उसको अपने काम में बहुत फायदा हुआ और आज से वही उनकी देखभाल करेगा।

सबसे पहले तो उसने अपनी जादू की छड़ी से एक बड़ा सा महल बनवाया। उसके बारे में उसने उनको बताया कि वह मकान उसने अपने उन्हीं नौकरों से बनवाया है जो लोग उसके नौकरों में सबसे जल्दी मकान बना सकते थे।

मकान क्या था वह तो एक बहुत बड़ा महल था। उसका परिवार अब उस महल में चला गया। उस महल में उन सबके लिये बहुत सारे कपड़े, नौकर और घर की देखभाल करने वाले मौजूद थे। और पैसे की तो कोई कमी ही नहीं थी।

वे सब बहुत खुश थे सिवाय मैनीचीनो के भाई के। उसका भाई तो उससे जल जल कर खाक हुआ जा रहा था। क्योंकि वह इस घर का बड़ा बेटा था और अपने पिता का बहुत लाड़ला था। अब उसके पास कुछ नहीं था और उसको हर चीज़ के लिये अपने छोटे भाई का मुँह तकना पड़ता था जो उसको बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था।

वह इस बात को सोच सोच कर ही बहुत परेशान था कि मैनीचीनो को इतना सारा पैसा मिला कहाँ से? सो तबसे उसने उसके

ऊपर नजर रखनी शुरू कर दी। मैनीचीनो जब तक अपने कमरे के अन्दर रहता तब तक वह उसके कमरे से उसकी चाभी के छेद से उसमें झाँकता रहता।

उसने देखा कि मैनीचीनो हमेशा एक छड़ी लिये रहता था। उसको लगा कि शायद उस छड़ी में ही कुछ भेद है सो उसने उसकी वह छड़ी चोरी करने का निश्चय किया।

मैनीचीनो अपनी उस जादू की छड़ी को अपनी एक कई ड्रौअर वाली आलमारी में रखता था। सो एक दिन जब वह घर में नहीं था तो उसका बड़ा भाई उसके कमरे में घुसा और उसकी वह छड़ी चुरा ली।

छड़ी चुरा कर वह उसको अपने कमरे में ले आया। वहाँ उसने उसको जमीन पर मारा पर कुछ नहीं हुआ क्योंकि उसके हाथ में वह

छड़ी बिल्कुल बेजान थी, एक सामान्य छड़ी जैसी, जादू की छड़ी नहीं।

वह बोला — "लगता है मुझसे कहीं गलती हो गयी। यह वह जादू की छड़ी है ही नहीं जो मैं सोच रहा था। लगता है कि वह कोई दूसरी छड़ी है जो शायद किसी दूसरी ड्रौअर में रखी होगी।"

यह सोच कर वह उस छड़ी को मैनीचीनो के कमरे में वापस रखने के लिये और उसकी दूसरी छड़ी ढूँढने के लिये उसकी दूसरी ड्रौअरों को देखने के लिये गया पर जैसे ही वह उसके कमरे में घुसा तो उसने मैनीचीनो को सीढ़ियों से ऊपर आते सुना।

इस डर से कि अब वह पकड़ा जायेगा उसने वह छड़ी दो हिस्सों में तोड़ दी और उसको मैनीचीनो के कमरे की खिड़की से बाहर की तरफ फेंक दिया जो बाहर बागीचे की तरफ खुलती थी।

अब मैनीचीनो वह छड़ी रोज तो इस्तेमाल करता नहीं था। वह तो उसका तभी इस्तेमाल करता था जब उसको उससे किसी चीज़ की जरूरत होती थी। इसलिये उसको यह बात उसी समय पता नहीं चली कि उसकी जादू की छड़ी का यह हाल हुआ।

पर इस घटना के बाद जब वह पहली बार अपनी जादू की छड़ी लेने गया और वहाँ वह उसको नहीं मिली जहाँ उसने उसको रखा था तो उसका माथा ठनका और वह तो पागल सा हो गया। उसको लगा कि न केवल उसकी सारी दौलत पल भर में ही खो गयी है बल्कि उसका तो सब कुछ खो गया है।

नाउम्मीद और दुखी हो कर वह घर से बाहर चला गया और बागीचे में परेशान सा इधर से उधर घूमता रहा। तभी उसको एक पेड़ की शाख में अपनी जादू की छड़ी टूटी हुई अटकी दिखायी दे गयी। यह देख कर तो उसके दिल की तो धड़कन ही रुक गयी।

उसने पेड़ की वह शाख हिलायी तो उस जादू की छड़ी के दोनों डंडे नीचे गिर पड़े। जैसे ही वे जमीन पर गिरे एक आवाज आयी "मालिक, हुकुम।" इन शब्दों को सुन कर मैनीचीनो की जान में जान आयी।

इसका मतलब यह था कि यह उसी की जादू की छड़ी थी और टूट जाने के बाद भी काम कर रही थी। उसने तुरन्त ही उन दोनों टुकड़ों को उठा कर रख लिया और आगे से उसको और ज़्यादा सावधानी से रखने का निश्चय किया।

मैनीचीनो स्पेन में

उन्हीं दिनों स्पेन के राजा ने सब देशों में यह खबर भिजवायी कि उसकी अकेली बेटी अब शादी के लायक हो गयी है सो सब देशों से बहुत बहादुर नाइट्स[9] को वहाँ तीन दिन की लड़ाई के लिये बुलाया जाता है और उनमें से जो कोई भी जीतेगा उसी के साथ राजकुमारी की शादी की जायेगी।

[9] Knights – a high ranking person in the King's people – see his picture above.

मैनीचीनो ने सोचा कि यह मौका तो उसके लिये बहुत ही अच्छा मौका है इस तरह वह पहले युवराज और फिर राजा बन सकता है। सो उसने अपनी जादू की छड़ी निकाली और उससे चमकता हुआ जिरहबख्तर[10], घोड़े, ढाल, मॉगी और स्पेन चल दिया।

अपना नाम और आने की जगह को छिपाने के लिये वह शहर के बाहर एक सराय में ठहर गया और लड़ाई के लिये तय किये हुए दिन का इन्तजार करने लगा।

यह लड़ाई एक बड़े से साफ मैदान में होने वाली थी जिसके चारों तरफ बड़े बड़े लौर्ड और उनकी पत्नियॉ बैठी हुई थीं। एक

छाते लगे चबूतरे पर राजा और राजकुमारी बैठे थे जो अपने खास लोगों से बात कर रहे थे।

अचानक कई बिगुल बजने की आवाज हुई और भीड़ नाइट्स को उस खुले मैदान में आते देखने लगी। वे सब अपने अपने हाथों में चमकदार भाले लिये हुए थे। तुरन्त ही लड़ाई शुरू हो गयी। सब एक दूसरे को मारने लगे। सब बहादुर थे। सब ताकतवर थे।

तभी मैदान में एक नया नाइट आया। उसका चेहरा ढका हुआ था उसकी पोशाक के निशानों[11] को कोई नहीं जानता था। उस नये नाइट ने एक एक करके सबको चुनौती दी।

[10] Translated for the word “Armor”. This worn on the body to protect it especially during the war.
[11] Translated for the words “Coat of Arms”

पहला नाइट आया तो वह उसके एक ही वार में नीचे गिर पड़ा। दूसरा आया तो वह कॉप गया और तीसरे का तो भाला ही टूट गया। चौथे के सिर का टोप[12] टूट गया।

इस तरह इस नये नाइट्स से सारे नाइट्स हार गये। इसके बाद बजाय इसके कि यह नया नाइट जीत की खुशी में मैदान में चारों तरफ चक्कर काटता यह नाइट मैदान के चारों तरफ लगी चहारदीवारी के ऊपर से कूद कर मैदान से बाहर भाग गया।

सारे लोग आश्चर्य से उसका यह तमाशा देखते रह गये और किसी को भी यह पता नहीं चल सका कि यह नाइट कौन था, कहॉ से आया था और कहॉ चला गया।

वहॉ बैठे लोगों ने सोचा — "अगर यह नाइट कल भी आया तो कल हम इसके बारे में सब कुछ पता कर लेंगे।"

अगले दिन वह नाइट फिर आया और एक बार फिर उसने अपनी बहादुरी दिखा कर सबको आश्चर्य में डाल दिया। वह पिछले दिन की तरह से जीत कर फिर वहॉ से भाग गया और एक बार फिर वहॉ के लोग यह पता ही नहीं कर सके कि वह कौन था, कहॉ से आया था और कहॉ चला गया।

राजा इस बात से कुछ परेशान भी हुआ और इससे उसको अपना अपमान भी लगा कि एक अनजान नाइट इस तरह से उसके

[12] Translated for the word "Helmet" – see its picture above.

जानने वाले नाइट्स को हरा कर वहॉ से भाग गया। सो अगले दिन उसने अपने नौकरों को हुकुम दिया कि अबकी बार जब वह आये तो वे उसको पकड़ लें।

इसके लिये उस दिन मैदान की चहारदीवारी दोहरी कर दी गयी।

वह नाइट तीसरे दिन भी आया और उस दिन भी जीत गया। फिर वह राजा के सामने सिर झुकाने गया। राजकुमारी ने खुश हो कर उसके ऊपर अपना कढ़ा हुआ रूमाल फेंका। उसने वह रूमाल लपक लिया और फिर से मैदान के दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

वहॉ के चौकीदारों ने हथियारों की सहायता से उसको रोकने की कोशिश की पर उसने अपनी तलवार की कुछ चालों से ही मैदान की चहारदीवारी में अपना रास्ता बना लिया और भाग गया। पर इस भागने में एक भाला उसकी एक टॉग में लग गया।

राजा ने अपने सारे शहर में उस नाइट की खोज का हुकुम दे दिया – घरों के अन्दर भी और बाहर भी।

अन्त में लोगों को वह शहर के बाहर की एक सराय में मिला, और वह भी बिस्तर में क्योंकि उसकी एक टॉग जख्मी हो गयी थी।

पहले तो वे उसको पहचान नहीं सके कि वह वही नाइट था या कोई और क्योंकि जो बड़े नाइट होते थे वे ऐसी साधारण सी जगह नहीं ठहरते थे। पर जब उन्होंने उसकी जख्मी टॉग पर राजकुमारी का कढ़ा हुआ रूमाल बॅधा देखा तब उनका सारा शक जाता रहा।

वे उसको राजा के पास ले गये जहॉ उससे उसकी पहचान पूछी गयी क्योंकि लड़ाई में जीत जाने की वजह से उसको राजकुमारी का पति और राजा का वारिस बनना था। इसके लिये उसका चरित्र साफ होना जरूरी था।

मैनीचीनो बोला — "मेरा चरित्र बिल्कुल साफ है पर मैं जन्म से नाइट नहीं हूॅ। मैं तो मिलान के एक सौदागर का बेटा हूॅ।"

वहॉ बैठे लोग राजकुमार और कुलीन लोगों ने अपने गले साफ करने शुरू कर दिये। जैसे जैसे मैनीचीनो अपनी कहानी सुनाता गया वहॉ शोर बढ़ता ही गया।

जब उसकी कहानी खत्म हो गयी तो राजा बोला — "तो तुम नाइट नहीं हो बल्कि एक सौदागर के बेटे हो और तुम्हारी सारी दौलत एक जादू का फल है। अगर यह जादू खत्म हो जाये तो तुम्हारा और तुम्हारे इस सबका क्या होगा?"

राजकुमारी अपने पिता से बोली — "पिता जी, आप देख रहे हैं न कि मैं आपकी इस लड़ाई की वजह से किस खतरे में फॅस गयी हूॅ।"

कुछ कुलीन लोग बोले — "क्या हम अपने से नीचे परिवार में जन्मे आदमी को अपना राजा स्वीकार कर लेंगे?"

राजा चिल्लाया — "चुप रहो चुप रहो। यह सब क्या शोर मचा रखा है। जो कुछ भी मैंने, यानी राजा ने कहा उसमें यह नौजवान बिना किसी शक के सबसे अच्छा निकला इसलिये अब यही मेरी बेटी

से शादी करने के लायक है और फिर मेरे राज्य का वारिस भी बनने के लायक है। अगर वह राजी हो तो।

इसके अलावा, क्योंकि तुम इसको स्वीकार नहीं करती और यह भी नहीं कहा जा सकता कि और लोग इस बात को कैसे लेंगे, इसलिये मैं इसको यह सलाह देता हूँ कि यह मेरी बेटी को छोड़ कर मुझसे इसकी जगह कोई और इनाम ले ले।"

मैनीचीनो बोला — "मैजेस्टी, आप इसके लिये मुझे क्या सलाह देते हैं? अगर आपकी उस सलाह से मुझे कोई फायदा होता होगा तो मैं उसे स्वीकार कर लूँगा।"

राजा बोला — "मैं सोचता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये तुम्हारी सारी उम्र के लिये **1000** लीरा[13] सालाना की पैन्शन तय कर दूँ।"

मैनीचीनो बोला — "मुझे मंजूर है।"

एक नोटरी बुलाया गया और उससे एक समझौता लिखवाया गया जिस पर दस्तखत करने के बाद मैनीचीनो तुरन्त ही मिलान के लिये रवाना हो गया।

[13] Lira – the then currency of Italy. Lira was its currency from 1861 to January 1, 1999 when European currency Euro took over it. It was in use in Napoleon times also – 1807-1814.

मैनीचीनो को मारने का प्लान

जब मैनीचीनो फिर अपने घर पहुँचा तो उसका पिता बीमार पड़ा हुआ था। वह जल्दी ही मर गया। अब दोनों भाई अपनी बूढ़ी माँ के साथ अकेले रह गये थे।

मैनीचीनो का बड़ा भाई हमेशा से ही उससे जला करता था, खास करके अब जबकि वे बहुत अमीर हो गये थे और अब उनको उस जादू की छड़ी की कोई जरूरत भी नहीं रह गयी थी सो उसने मैनीचीनो को मार डालने की सोची। इसके लिये उसने दो मारने वाले किराये पर लिये।

मैनीचीनो अक्सर मिलान के बाहर अपने दोस्तों से मिलने जाया करता था और अभी भी वह अपनी जादू की छड़ी हमेशा अपने साथ ही रखता था।

एक दिन जब मैनीचीनो अपने दोस्तों से मिलने मिलान से बाहर जा रहा था तो उसके भाई ने उन दोनों मारने वालों को उसी सड़क पर खड़ा कर दिया।

इधर जब मैनीचीनो शहर से बाहर निकला तो उसने अपनी जादू की छड़ी जमीन पर मारी तो आवाज आयी — "मालिक, हुकुम।"

वह बोला — "मैं हुकुम देता हूँ कि मेरे घोड़े बिजली की तेज़ी से दौड़ जायें।" यह कहते ही उसके घोड़े बिजली की सी तेज़ी से दौड़ पड़े।

रास्ते में खड़े उन दोनों मारने वालों ने अपने सामने जाती हुई किसी चीज़ की जाती हुई की आवाज तो सुनी पर क्योंकि वे घोड़े बहुत तेज़ भाग रहे थे कि उनको यह भी पता नहीं चला कि उनके सामने से क्या चला गया।

उन्होंने सोचा कि हम उसको शाम को पकड़ लेंगे जब वह अपने घर लौटेगा पर वह तो शाम को भी अपनी उसी तेज़ी से भागा चला गया जिस तेज़ी से वह सुबह गया था सो वे उसको शाम को भी नहीं पकड़ सके।

बड़े भाई ने फिर उन मारने वालों को अपने महल में बुला लिया और उनको मैनीचीनो के कमरे के पास ले गया और वहॉ उनको उसको मारने के लिये तैनात कर दिया।

पर मैनीचीनो को कुछ शक सा हो गया सो उसने अपनी जादू की छड़ी को कहा कि वह उसके दरवाजे को ऐसा कर दे कि कोई दूसरा उसे खोल ही न सके।"

इस तरह उन मारने वालों ने रात भर उसके कमरे में घुसने की कोशिश की पर वे उसका दरवाजा ही नहीं खोल सके। सुबह होने पर वे वहॉ से चले गये।

एक दिन मैनीचीनो से बहुत बड़ी गलती हो गयी। एक बार उसको शिकार के लिये जाना था तो उसने सोचा कि अगर मैं इस जादू की छड़ी को अपने साथ ले जाऊॅगा तो मैं बेमौत मारा जाऊॅगा

सो इससे तो अच्छा यह है कि मैं इसको यहीं अपने कमरे में ही रख देता हूँ।

यही सोचते हुए उसने अपनी जादू की छड़ी अपने कमरे में रख दी और अपने दोस्तों के साथ शिकार खेलने के लिये बिना उस छड़ी के ही चला गया।

पर उसके भाई की ऑखें तो हमेशा खुली रहती थीं। सो जब उसने देखा कि मैनीचीनो ने अपनी जादू की छड़ी अपने कमरे में रख दी है तो उसने फिर मैनीचीनो के कमरे में रखी आलमारी की ड्रौअर खोजीं और वह टूटी हुई जादू की छड़ी निकाल ली।

"तो यह है वह छड़ी। लगता है कि यह अभी भी काम करती है नहीं तो मेरे भाई ने इसको वहॉ से उठायी ही नहीं होती जहॉ मैंने इसको फेंका था। पर अब बस इसका काम खत्म।"

यह कह कर उसने छड़ी के दोनों टुकड़ों को रसोईघर में ले जा कर उनको आग में डाल दिया।

छड़ी के वे दोनों टुकड़े कुछ पल में ही जल कर राख हो गये और उसके साथ राख हो गया वह महल, दौलत, पैसा, घोड़े, कपड़े और भी सब कुछ जो उसकी वजह से उनको मिला था।

जिस समय मैनीचीनो के भाई ने उसकी वह जादू की डंडी जलायी उस समय मैनीचीनो घने जंगल में था। उस समय वह जो बन्दूक लिये हुए था, वह जिस घोड़े पर चढ़ा हुआ था और उसके वे

कुत्ते जो खरगोशों के पीछे भाग रहे थे वे सब हवा के साथ उड़ गये।

उसको लगा कि उसकी सारी खुशकिस्मती हमेशा के लिये चली गयी। और यह सब उसकी अपनी बेवकूफी से ही हुआ। वह तो वहीं बहुत ज़ोर से रो पड़ा।

मैनीचीनो की मौत

अब मिलान वापस जाना बेकार था। उसने सोचा कि अब उसको स्पेन जाना चाहिये जहॉ उसकी **1000** लीरा सालाना की पेन्शन अभी भी थी जो राजा ने उसके लिये तय की थी। सो वह पैदल ही स्पेन चल दिया।

जब वह नाव से स्पेन जा रहा था तो उसको एक आदमी मिला जो बैल बेचता था। जैसा कि अक्सर साथ यात्रा करने वाले करते हैं उन दोनों की नाव में आपस में बात हुई। फिर बल्कि नाव से उतरने के बाद भी वे सड़क पर बात करते करते चलते रहे।

इस बीच मैनीचीनो ने उस बैल के व्यापारी को अपने बारे में सब कुछ बताया।

जब उस बैल के व्यापारी को मैनीचीनों की बदकिस्मती के बारे में पता चला तो उसने उससे कहा कि क्या वह उसके बैलों को वहॉ ले जा सकता है जहॉ उनकी जरूरत है। मैनीचीनो राजी हो गया और दोनों अपने अपने कामों में लग गये।

कुछ ही दिनों में मैनोचीनो के पास कुछ पैसे जमा हो गये। एक शाम जब वह अपने साथियों के साथ एक सराय में ठहरा हुआ था तो वहाँ कुछ मारने वालों ने उनके ऊपर हमला कर दिया।

वे मारने वाले काफी थे। मैनीचीनो ने हथियार उठाये भी पर क्योंकि वे कई थे इसलिये वह अकेला ज़्यादा कुछ नहीं कर सका और उन्होंने उसको मार दिया।

इस तरह से मैनीचीनो के साहसिक कामों और बदकिस्मती सबका अन्त हो गया। पर इसके मरने से इसके भाई का कोई भला नहीं हुआ क्योंकि मैनीचीनो की जादू की डंडी जलाते ही उसकी सारी दौलत और जायदाद का तो अन्त हो गया था। और उनके जाने के बाद अब वह फिर से गरीब हो गया था।

उसके बाद उसने सौदागरी का धन्धा भी शुरू किया पर वह चला नहीं और फिर उसकी हालत बुरी और बुरी से भी और ज़्यादा बुरी होती चली गयी। इसके बाद वह डाकुओं के एक गिरोह में शामिल हो गया।

और यह तो सभी जानते हैं कि दस में से नौ बार तो डाकू बच ही जाते हैं पर दसवीं बार पकड़े भी जाते हैं। उसके साथ भी यही हुआ।

एक बार सिपाहियों ने उन डाकुओं को पकड़ने के लिये जाल बिछाया और इत्तफाक से वे सब डाकू पकड़े गये।

उनको हथकड़ी बेड़ी लगा कर जेल में डाल दिया गया और फिर उनको फॉसी पर चढ़ा दिया गया। उसी में मैनीचीनो को भी फॉसी चढ़ा दिया गया।

2 पहेलियों वाली राजकुमारी[14]

पहेलियों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक बहुत सुन्दर राजकुमारी थी जिसका नाम था मारिया[15]। वह इतनी होशियार थी कि कोई भी पहेली बूझ सकती थी। मारिया एक बहुत ही होशियार लड़की थी जो सुन्दर तो थी ही साथ में अक्लमन्द भी बहुत थी।

ऐसी लड़की के लिये अब यह तो साफ ही था कि वह शाही दरबार की एक सी ज़िन्दगी से कितनी बोर हो गयी थी। राजकुमारी मारिया की किसी भी तरह की पहेली को बूझने की असाधारण योग्यता **17** साल पहले सामने आयी जब वह बहुत छोटी सी बच्ची थी।

उन दिनों दरबार के हॅसोड़िये[16] अक्सर लोगों से पहेलियॉ पूछा करते थे जिनको वे शहर के सरकस की यात्रा में सीखा करते थे। एक हॅसोड़ ऐसी ही एक यात्रा से बस अभी अभी दरबार में लौटा था और उसके पास उसकी यात्रा की कई दिल बहलाने वाली कहानियॉ थीं।

---

[14] The Princess of Riddles – a folktale from Portugal, Europe. By Laura Silva.
Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/342/preview

[15] Maria – name of the princess

[16] Translated for the word “Jester”

सो उस दिन उसने बड़े गर्व से कहा — "आज मेरे पास तुम्हारे लिये सबसे ज़्यादा मुश्किल पहेलियाँ हैं। उन पहेलियों को मेरे अलावा और कोई भी हल नहीं कर सका। मैं उनको तुम्हारे लिये समुद्र पार के एक छोटे से टापू से ले कर आ रहा हूँ।

वहाँ उस टापू पर एक भिखारी रहता है जो जो भी उससे मिलता है हर एक से यही कहता है कि मुझे तुमसे कोई पैसा नहीं चाहिये बस तुम मेरी पहेली का जवाब दे दो तो तुम अपने रास्ते पर बहुत जल्दी पहुँच जाओगे। पर अगर मेरी पहेली का जवाब नहीं दे पाओ तो मेरी झोली में पैसा डालते जाओ।"

हँसोड़िये ने मुस्कुराते हुए उस भिखारी की आवाज की नकल बनायी और दरबार में बैठे लोगों से एक पहेली पूछी —

मैं एक किले जितना बड़ा हूँ फिर भी हवा से हलका हूँ
एक सौ आदमी और उनके घोड़े भी मुझे नहीं हिला सकते
बताओ मैं क्या हूँ

यह सुन कर सारे दरबार में कानफूसी होने लगी फिर सब लोग अपनी अपनी ठोड़ियों पर हाथ रख कर सोचने के पोज़ में बैठ गये।

आज तक यह पहेली जहाँ भी कही जाती वहीं लोग इसको सुन कर ऐसे ही बैठ जाते हैं। उस टापू पर जहाँ वह भिखारी रहता था वहाँ भी जो कोई भी इसको सुनता था इतना परेशान हो जाता था कि इसका जवाब नहीं बता पाता था कि ऐसी चीज़ क्या हो सकती थी।

हर बार जब भी यह पहेली कही जाती तो इसे कोई हल नहीं कर पाता। वह अपनी जेब से एक सिक्का निकालता भिखारी को देता और चला जाता।

यह इतने सारे दिनों तक चलता रहा कि उस भिखारी ने इससे बहुत सारे पैसे कमा लिये और उस टापू का सबसे अमीर आदमी बन गया।

बहुत सारे लोग उसके बारे में यह सोचते थे कि वह कोई धोखा देने वाला आदमी है। उसने यह पहेली बिना किसी हल के लिख ली है ताकि वह टापू पर रहने वालों को बेवकूफ बना सके।

पर हॅसोड़िये ने कहा कि ऐसा नहीं है कि यह भिखारी कोई धोखा देने वाला है। यह पहेली ठीक है और उसने यह पहेली बूझ ली है। और वही एक है जिसने यह पहेली बूझी है।

फिर उसने दरबार से कहा इस पहेली को हल करने का तरीका यह है कि इसके ऊपर बहुत सोच विचार न किया जाये।

जब हॅसोड़िये को यह पक्का हो गया कि अब दरबार में कोई भी लौर्ड इस पहेली को हल नहीं कर सकता तो उसने अपना सीना फुलाया और बोला — "इसका जवाब है... ।"

तभी नौजवान राजकुमारी ने बीच में ही बात काटी और बोली — "किले की परछाईं।"

उस समय जो लोग दरबार में इकट्ठा थे उन सबने राजकुमारी की तरफ घूम कर देखा और उसकी होशियारी पर आश्चर्य से दाँतों तले उँगली दबा ली।

छोटी मारिया अपने गुड़ियों के घर से खेलती रही। उसको तो पता भी नहीं था कि उसने लोगों में कितना आश्चर्य पैदा कर दिया था। सारा दरबार ताली बजा कर हँस पड़ा और हँसोड़ के तो आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा कि एक बच्ची ने उसकी पहेली बूझ दी थी।

उसका रंग तो राजकुमारी की पोशाक के गुलाबी रंग से बस थोड़ा ही ज़्यादा गुलाबी पड़ गया था। और वह दरबार से जल्दी से हाँफता हुआ सा भाग गया।

अब यह तो कहने की जरूरत ही नहीं है कि उस दिन के बाद से वह हँसोड़ राजकुमारी का कोई बहुत बड़ा बड़ाई करने वाला तो रह नहीं गया था।

उसको लगा कि राजकुमारी ने उसकी बातों पर जो लोग पहले तालियाँ बजाते थे उसकी वे तालियाँ चुरा ली हैं और अब वे लोग उसको सारे दरबार के सामने बेवकूफ समझते हैं। राजकुमारी की होशियारी की चर्चा उसके अपने राज्य से ले कर दूर दूर तक के देशों में फैल गयी।

जल्दी ही वह बीस साल की हो गयी। अब राजा को उसके लिये दुलहा खोजने की चिन्ता हुई। पर उसके लिये तो कई उम्मीदवार थे। वह किससे उसकी शादी करे।

मारिया की परेशानी यह थी कि ज़्यादातर इयूक लौर्ड और कुलीन लोग उसको कुछ बेवकूफ से लगते थे। अक्सर वह उनको देख कर बता सकती थी कि वे कैसे बरताव करेंगे।

एक दिन मारिया ने अपने पिता से कहा — "पिता जी मैं एक ऐसे लड़के से शादी करना चाहती हूँ जिसको मैं सचमुच में प्यार करूँ। मैं केवल उसी से शादी करूँगी जिसकी पहेली मैं न बूझ सकूँ।"

मारिया ने अपने पिता को समझाया कि कोई ऐसा आदमी ही उनकी दुनियॉ को रोशन रख सकेगा जो इतना होशियार होगा क्योंकि ऐसे ही आदमी से ज़िन्दगी में हमेशा आश्चर्य और एक प्रकार की खुशी बनी रहेगी। वह अपने तेज़ दिमाग और आश्चर्य भरे स्वभाव से सचमुच में मेरा दिल जीत लेगा।

राजा राजी हो गया और मुकाबला रखा गया। अब किसी भी उम्मीदवार के लिये मुकाबला यह था कि वह उम्मीदवार राजकुमारी से कोई पहेली पूछेगा और जिस उम्मीदवार की पहेली का राजकुमारी जवाब दे देगी उस उम्मीदवार को किले के तहखाने में बन्द कर दिया जायेगा। और जिस उम्मीदवार की पहेली का राजकुमारी जवाब नहीं दे पायेगी उसी से उसकी शादी होगी।

इस मुकाबले के लिये राजा का तर्क यह था कि यह मुकाबला सबसे अच्छे उम्मीदवार लोगों के लिये था।

समय के साथ यह खबर दूर और पास सब देशों में फैल गयी। यहॉ तक कि यह खबर एक कोने के देश में भी पहुँच गयी जहॉ मैनुअल[17] नाम का एक किसान का बेटा रहता था।

अब इस नौजवान किसान को मुकाबले बहुत अच्छे लगते थे और वह हमेशा से ही राजकुमारी के बारे में उत्सुक रहता था सो वह उस किले की तरफ अपनी पहेली रखने के लिये और राजकुमारी का दिल जीतने के लिये चल दिया।

मैनुअल के गॉव वालों ने सोचा कि वह पागल हो गया है। सब जानते थे कि राजकुमारी राजा का तहखाना ऐसे अक्लमन्द आदमियों से भर रही थी जिनकी पहेलियों का जवाब देना राजकुमारी के लिये कोई मुश्किल न हो।

वे सब किसान के बेटे की हिम्मत की बड़ाई तो कर रहे थे पर फिर भी उनको यह भी यकीन था कि वह नौजवान किसान भी उसी तरह से उस राजकुमारी के तहखाने में जायेगा जैसे पहले और लोग जा चुके हैं।

मैनुअल ने गॉव वालों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह सुन्दर राजकुमारी से मिलने के लिये बहुत उत्सुक था

[17] Manuel – name of the peasant boy

इसके अलावा वह उसकी बोरियत में भी उत्सुक था क्योंकि वह यही नहीं समझ पा रहा था कि कोई भी आदमी इतना रूखा कैसे हो सकता है जबकि दुनियॉ में इतनी सुन्दरता फैली पड़ी है।

उस नौजवान किसान को इस बात से कोई मतलब नहीं था कि उसके पास राजकुमारी से पूछने के लिये कोई पहेली नहीं थी लेकिन बस वह तो अपनी यात्रा पर चल पड़ा था क्योंकि उसको विश्वास था कि वह अपनी यात्रा में ही कोई पहेली निकाल लेगा।

मैनुअल इतनी देर तक चला कि समय के खोने का उसके लिये कोई मतलब ही नहीं था। हालॉकि यात्रा इतनी मुश्किल थी कि कोई मजबूत से मजबूत आदमी भी उस यात्रा से टूट सकता था पर मैनुअल तो हर कदम पर प्रकृति की सुन्दरता को देखते हुए अपने आनन्द में चलता ही जा रहा था।

उसको बड़ी बड़ी नदियों के बहने का संगीत बहुत अच्छा लग रहा था। उसको जंगल के प्राणियों की आवाजें बहुत अच्छी लग रही थीं। उसको पेड़ों में बहती हवा की सरसराहट बहुत अच्छी लग रही थी।

वह उन जानवरों के रास्तों पर ऑखमिचौली खेलता जा रहा था जो उसका रास्ता काट रहे थे। और वह हमेशा यह देखने के लिये भी रुक जाता कि उस दिन का सूरज का डूबना पिछले दिन के सूरज के डूबने से कितना अलग था।

मैनुअल राजकुमारी के किले के जितना पास आता जाता उतना ही वह उसको कम समझता जाता। क्योंकि उसको उस आदमी के लिये अफसोस होता जो इस दुनियॉ पर आश्चर्य नहीं करता जिसके अन्दर इतनी सुन्दरता और इतना आश्चर्य भरा पड़ा था। उसको यह लगता ही नहीं था कि इतनी सुन्दर आश्चर्य भरी दुनियॉ में कोई कैसे बोर हो सकता है।

मैनुअल को अब किला दिखायी देने लगा था पर अभी तक उसके दिमाग में राजकुमारी के लिये कोई पहेली नहीं थी।

पर उस शाम एक अजीब सी घटना घटी। जब नौजवान किसान एक जंगली सूअर से अपना शाम का खाना बनाने बैठा तो उसने उसका पेट काटा। उसने देखा कि उसके पेट में तो एक मेंढक था। मैनुअल ने सोचा कि सूअर तो मेंढक नहीं खाते फिर यह मेंढक इस सूअर के पेट में कहॉ से आया।

और जैसे ही यह विचार उसके दिमाग में आया कि मेंढक तो उसके पेट में से कूद कर जंगल में भाग गया। मैनुअल को यह सब देखने में बहुत मजेदार लगा और वह इस बात पर अपने आप ही बहुत देर तक हॅसता रहा।

उसका यह हॅसना तब तक नहीं रुका जब तक उसके दिमाग में यह नहीं आया कि इस अजीब घटना को तो वह राजकुमारी के लिये पहेली बनाने के लिये इस्तेमाल कर सकता है।

अगले दिन वह किले में आ गया तो उसको बढ़िया खाने पीने को और आराम से ठहराने की जगह दी गयी। उसको पहनने के लिये बहुत बढ़िया कपड़े दिये गये और फिर उसका परिचय कराने के लिये उसको राजकुमारी के महल में ले जाया गया।

उसने देखा कि राजकुमारी तो उससे भी बहुत ज़्यादा सुन्दर थी जितना उसने उसके बारे में उसने सुन रखा था। और जब उसने मैनुअल को नमस्ते की तब तो उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकला।

यह सब देख कर तो नौजवान किसान ने अपने सारे देवताओं से प्रार्थना की कि भगवान करे राजकुमारी उसकी पहेली का जवाब न दे सके क्योंकि वह उसके साथ जितना सम्भव हो सकता था उतना समय बिताना चाहता था। हो सकता है कि वह उससे शादी भी करना चाहता हो।

मैनुअल अपनी पूरी हिम्मत बटोर कर आगे बढ़ा और राजकुमारी से अपनी पहेली पूछी —

मैंने तुम्हारी भूख तो शान्त की पर अपनी भूख शान्त नहीं कर सका
खाना कूद कर दौड़ में भाग गया पेट को भी आह भरने में देर हो गयी
अगर ऐसी बात है तो मैं क्या हूँ

यह पहेली सुन कर मारिया तो चुप रह गयी। वह तो यह सोच भी नहीं पायी कि मैनुअल उस मेंढक के बारे में कुछ कह रहा था जो उसने पिछली रात देखा था।

उसका दिमाग उस पहेली को सुलझाने के लिये इधर उधर दौड़ने लगा पर उसके दिमाग में ही कुछ नहीं आया।

ऐसा पहली बार हो रहा था कि मारिया किसी पहेली का जवाब उसी समय नहीं दे पा रही थी। फिर भी उसने इस बहादुर सीधे सादे नौजवान से बेवकूफ बनने से इनकार कर दिया। और इससे शादी करने की तो वह सोच भी नहीं सकती थी।

राजकुमारी ने मैनुअल से कहा — "आपकी पहेली के लिये धन्यवाद जनाब। आप हमारे महल में तीन चॉद तक ठहरें ताकि मैं आपकी इस पहेली पर विचार कर सकूँ।"

मैनुअल को शाही मेजबान के महल की आराम की ज़िन्दगी बिताने में भला क्या ऐतराज हो सकता था। वह तुरन्त ही मान गया।

उसको पूरा विश्वास था कि कुछ भी हो जाये और राजकुमारी कितना भी समय ले ले पर वह यह कभी नहीं जान पायेगी कि उसकी यात्रा में उस शाम जंगल में उसके साथ क्या हुआ था।

उधर राजकुमारी भी तुरन्त ही जान गयी थी कि वह इस पहेली का जवाब किसी तरह भी नहीं दे पायेगी सो उसने सोचा कि इतने समय में वह उसको हराने का कोई और प्लान निकालेगी।

ऐसा प्लान निकालने में मारिया को कोई बहुत ज़्यादा समय नहीं लगा क्योंकि वह तो एक बहुत ही हाजिरजवाब राजकुमारी थी।

और इस प्लान के अनुसार मारिया ने अपनी एक सबसे सुन्दर दासी को मैनुअल के कमरे में भेजा। इस दासी का नाम लिडिया[18] था। और इसका काम यह था कि वह मैनुअल को अपनी सुन्दरता के जाल में फॉस कर अपने से प्रेम करने पर मजबूर कर ले और फिर चालाकी से उसकी पहेली का जवाब उससे पूछ ले।

इस बात में राजकुमारी मारिया का तर्क यह था कि इससे केवल ऐसा ही नहीं लगेगा कि यह पहेली मैंने तीन चॉद में बूझी है पर बाद में मैनुअल भी शायद मुझसे शादी करना न चाहे क्योंकि शायद वह लिडिया को चाहने लगे।

पर मारिया की मैनुअल को लिडिया की तरफ आकर्षित करने के लिये अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद मैनुअल लिडिया की तरफ आकर्षित नहीं हुआ। उसको लिडिया का साथ तो अच्छा लगा उसकी दी हुई शराब भी अच्छी लगी पर राजकुमारी मारिया उसके दिमाग से नहीं निकली।

वह वहॉ समय गुजारने के लिये बहुत उत्सुक नहीं था क्योंकि उसको पूरा यकीन था कि इन दिनों में वह और राजकुमारी एक दूसरे से बहुत कुछ सीख लेंगे। असल में मैनुअल को पक्का यकीन था कि उनकी जोड़ी बहुत अच्छी रहेगी।

जब लिडिया मैनुअल से पहेली का जवाब बिना जाने ही लौट गयी तो राजकुमारी मारिया बहुत दुखी हुई।

[18] Lidia – name of the first lady-in-waiting

सो अगली सुबह उसने एक और दासी मैनुअल के पास भेजी जिसका नाम कारमैन[19] था। इस बार उसने उसके हाथ एक और शराब भेजी जो पहले दिन की शराब से भी ज़्यादा तेज़ थी। पर कारमैन भी उससे बिना जवाब जाने ही लौट आयी।

तीसरी रात राजकुमारी ने अपनी आखिरी दासी भेजी जिसका नाम रोज़ा[20] था। पर इससे पहले कि रोज़ा मैनुअल के कमरे में पहुँचती बड़ा हॅसोड़िया वहाँ आया और उस नौजवान किसान से बोला — "ओ लड़के, क्या तुम वाकई इतने सीधे हो कि तुमको यह दिखायी नहीं पड़ रहा कि तुम्हारे साथ यह चाल खेली जा रही है?

हालाँकि यह नियमों के खिलाफ है कि तुम्हारे पास इस तरह से दासियाँ भेजी जायें पर फिर भी राजकुमारी तुम्हारे पास दासियाँ भेज रही है ताकि वह तुम्हारी पहेली का जवाब पा सके। याद रखना कि राजकुमारी बजाय अक्लमन्द के चालाक ज़्यादा है।"

हालाँकि भोला भाला मैनुअल यह सब सुन कर बहुत आश्चर्यचकित हुआ फिर भी उसने अपने बरताव के तरीके नहीं बदले। उस शाम उसने अपने तीसरे मेहमान का बड़े अच्छे से स्वागत किया।

रोज़ा जब मैनुअल के पास आयी तो एक कविता की किताब और एक बहुत ही तेज़ शराब का जग ले कर आयी। मैनुअल ने

[19] Carmen – name of the second lady-in-waiting
[20] Rosa – name of the third lady-in-waiting

उसकी कविताऐं सुनीं और थोड़ी सी शराब पी पर उसका बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता था।

उस रात रोज़ा के जाने से पहले मैनुअल ने रोज़ा को अपनी पहेली का एक गलत जवाब दे दिया। और राजकुमारी की भेजी हुई कविता की किताब उसको धोखा देने के सबूत में अपने पास रख ली।

मैनुअल ने सोचा कि — "अगर राजकुमारी इसी तरह से बरताव करना चाहती है तो मैं राजकुमारी को उसके खेल में उसी को मात दे दूँगा।"

अगले दिन आखिरी सुबह सारा दरबार यह देखने के लिये जुड़ा हुआ था कि आज एक और नौजवान ज़िन्दगी भर के लिये राजकुमारी के तहखाने में जायेगा।

मैनुअल शाही दरबार के बीच अकेला खड़ा था और राजकुमारी के आने का इन्तजार कर रहा था।

राजकुमारी आयी और अपनी सबसे कोमल आवाज में बोली — "मैं तुम्हारे सवाल पर तीन दिन विचार करती रही। और इस सबके लिये मैं तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूँ पर मुझे बहुत अफसोस है कि तुम्हारी पहेली का जवाब यह है...

कि प्रकृति में अक्सर अजीब अजीब बातें हुआ करती हैं। जब तुम यहाँ आ रहे थे तो तुम्हारे सामने एक बड़ा खरगोश आया जिसने

एक टिड्डे को खा लिया। इसलिये तुम्हारी पहेली का जवाब यह है कि "मैं एक टिड्डा हूँ।"

यह सुन कर मैनुअल हँसा — "राजकुमारी जी आपकी कोशिश तो बहुत अच्छी है।" कह कर उसने अपनी जेब से रोज़ा की दी हुई कविता की किताब निकाली और बोला — "पर मुझे पूरा विश्वास है कि आपको इस पहेली का जवाब किसी ने गलत बताया है।"

यह सुन कर राजकुमारी की भौंहें तो आसमान पर चढ़ गयीं और रोज़ा तो शर्म के मारे बेहोश ही हो गयी। उसके बाद कारमैन और लिडिया भी बेहोश हो गयी।

सारा दरबार शोर से गूँज गया और सब दरबारियों को लगा कि बेचारे मैनुअल के खिलाफ कोई चाल खेली गयी है।

भीड़ में से एक इलजाम लगाने वाली सी आवाज आयी — "क्या राजकुमारी जी ने इस नौजवान को धोखा देने की कोशिश की है? क्या आप अपनी दासियों को इसके पास भेजती रही हैं ताकि आपको पहेली का जवाब पता चल जाये?"

पर दयालु मैनुअल ने उन सबको शान्त कर दिया और एक बार फिर राजकुमारी से कहा — "आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिये राजकुमारी जी। मैं आपसे बिल्कुल शादी की इच्छा नहीं रखता जब तक कि आप मुझसे शादी करना नहीं चाहेंगी।

उस पहेली को छोड़िये मैं अब आपके सामने एक और नयी पहेली रखता हूँ। अगर आप उस पहेली का सही सही जवाब दे

देंगी तो फिर हम इस बात पर राजी हो जाते हैं कि मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा और फिर आपको कभी तंग नहीं करूँगा।

पर अगर आप मेरी दूसरी पहेली का जवाब नहीं दे पायीं तो आप उन सबको आजाद कर देंगी जिनको आपने अपने तहखाने में डाल रखा है।"

यह सुन कर तो मारिया गुस्से से लाल पीली हो गयी क्योंकि उस नौजवान ने तो उसको सारे दरबार के सामने पहले ही बेवकूफ बना दिया था कि वह एक धोखा देने वाली है।

अब तो उसकी बस एक ही इच्छा रह गयी थी कि वह उसको अपने पहरेदारों से पकड़वा कर बाहर निकलवा दे पर वह यह भी नहीं कर सकती थी। क्योंकि इसके बाद अब उसके पास कोई और चारा नहीं था कि वह उसकी बात मान ले।

पर उसी समय उसके दिल में एक और नया अजीब विचार उठ रहा था जिसे उस नौजवान के लिये उसकी बड़ाई कहा जा सकता था या फिर उसको पाने की इच्छा।

तभी वह नौजवान मैनुअल बोला — "वह क्या चीज़ है जो निगली भी जा सकती है और जो निगल भी सकती है।"

राजकुमारी मारिया इस पहेली का जवाब तभी की तभी बता सकती थी। इसका जवाब था "घमंड"। और यह घमंड ही था जो राजकुमारी अब निगलने को तैयार थी।

इस कहानी का अन्त इस कहानी में नहीं दिया हुआ है पर वह साफ नजर आता है कि राजकुमारी ने मैनुअल की दूसरी पहेली का भी जवाब नहीं दिया और घमंड निगल कर हारने का बहाना किया। फिर अपने वायदे के मुताबिक उसने मैनुअल से शादी कर ली और जिनको उसने अपने तहखाने में बन्द कर रखा था उन सबको छोड़ दिया।

3 एक बड़े साइज़ का आदमी का शिष्य[21]

पहेली बूझने की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली है।

यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि जंगल के किनारे पर एक लड़का रहता था जिसका नाम मनोइल[22] था। वह अपने माता पिता के साथ रहता था। उसके माता पिता इतने गरीब थे कि वे उसको पढ़ने के लिये स्कूल नहीं भेज सकते थे।

अब वह क्योंकि स्कूल नहीं जाता था तो वह सारा सारा दिन खेलता ही रहता था। कभी मैदानों में कभी नदी के किनारे कभी जंगल के किनारे जहॉ बड़े साइज़ का आदमी[23] रहता था।

एक दिन जब मनोइल खेलने के लिये जंगल की तरफ गया हुआ था तो उसको वह बड़े साइज़ का आदमी मिल गया।

बड़े साइज़ का आदमी जंगल में क्योंकि अकेला रहता था तो उसको वहॉ बड़ा अकेलापन लगता था। मनोइल के देख कर उसको लगा कि उसके पास भी मनोइल जैसा एक लड़का हो।

---

[21] A Giant's Pupil – a folktale from Brazil, South America.
Taken from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_33.html
Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

[22] Manoel – the name of the boy

[23] Translated for the word "Giant"

सो जैसे ही उसने मनोइल को देखा तो वह तो उसको बहुत ही अच्छा लगा। बस फिर क्या था उस दिन के बाद से वे दोनों रोज ही साथ साथ रहने लगे।

बड़े साइज़ के आदमी ने मनोइल को जंगल के बहुत सारे भेद[24] बताये। उसने उसको हवा बारिश गरज और बिजली के भी भेद बताये। फिर उसने उसको जंगली जानवरों चिड़ियों और सॉपों के बारे में भी बहुत कुछ बताया।

इस तरह से उस बड़े साइज़ के आदमी के साथ सीखते सीखते मनोइल एक बहुत ही अक्लमन्द लड़का बन गया। उसके माता पिता को उसकी अक्लमन्दी पर बड़ा घमंड होने लगा यहॉ तक कि उसके गुरू बड़े साइज़ के आदमी को भी।

एक दिन राजा का एक दूत घोड़े पर चढ़ कर राजा की बेटी का सन्देश ले कर राज्य में आया कि राजा की बेटी सुन्दर राजकुमारी केवल उसी से शादी करेगी जो उससे कोई ऐसी पहेली पूछेगा जिसका वह जवाब नहीं दे सकेगी।

वे सब राजकुमार जिन्होंने उसके छज्जे के नीचे प्रेम के गीत गाये थे वे सब बेवकूफ थे। राजकुमारी तो किसी ऐसे आदमी से शादी करना चाहती थी जो उससे ज़्यादा अक्लमन्द हो।

जब मनोइल ने राजकुमारी का यह सन्देश सुना तो उसने अपने माता पिता से कहा — "पिता जी मैं राजकुमारी से एक पहेली पूछने

[24] Translated for the word "Secret"

के लिये उसके महल जा रहा हू। मुझे पूरा यकीन है कि वह मेरी पहेली नहीं बूझ पायेगी।"

उसकी मॉ ने कहा — "हमें मालूम है बेटा कि तुम एक बहुत ही होशियार और चतुर लड़के हो पर वहॉ महल में तो बहुत सारे सुन्दर राजकुमार और कुलीन लोग होंगे जो राजकुमारी से अपनी अपनी पहेलियॉ पूछ रहे होंगे।

बेटे तब क्या होगा जब राजकुमारी एक मैले से कपड़े पहने हुए लड़के की पहेली सुनेगी ही नहीं।"

मनोइल बोला — "मॉ तुम चिन्ता न करो मैं उसको अपनी पहेली सुना कर ही रहूँगा।"

मनोइल के पिता ने पूछा — "तुम उससे कौन सी पहेली पूछोगे बेटा?"

लड़का बोला — "मैंने उसके बारे में अभी कुछ सोचा नहीं है पिता जी। जब मैं महल जा रहा होऊँगा तब मैं अपनी पहेली बनाऊँगा। और मैं वहॉ तुरन्त ही जाना चाहता हूँ।"

दयालु बड़े साइज़ के आदमी को जो अब तक मनोइल का दोस्त बन चुका था जब इसका पता चला तो उसने मनोइल को आशीर्वाद दिया और उसकी खुशकिस्मती के लिये प्रार्थना की।

लड़के की मॉ ने उसके लिये उसके साथ ले जाने के लिये खाना बनाया। उसका पिता घर के दरवाजे के बाहर बैठ कर अपने सब

पड़ोसियों से यह डींग हॉकने लगा कि उसका बेटा राजा की बेटी से शादी करने जा रहा है।

मनोइल ने अपनी मॉ से अपना खाना लिया और यात्रा में अपने साथ के लिये अपना कुत्ता साथ ले लिया ओर राजा के महल की तरफ चल दिया।

मनोइल चलता रहा चलता रहा। उसने जंगल पार किये नदी पार की। आखिर उसकी मॉ का दिया हुआ खाना खत्म हो गया।

जब उसको फिर भूख लगी तो रास्ते में पड़े एक शहर में उसने अपने आखिरी पैसे से कुछ रोटी खरीदी। उसको ले कर वह उसे खाने के लिये जंगल की तरफ चलता चला गया।

पर उसको खुद खाने से पहले उसने उसका एक टुकड़ा तोड़ कर अपने कुत्ते को खिलायी। उसको खा कर उसका कुत्ता तुरन्त ही मर गया क्योंकि वह रोटी जहरीली थी।

मनोइल को अपने कुत्ते का इस तरह मरता देख कर रोना आ गया सो वह वहीं रास्ते में रुक गया। तभी उसने देखा कि तीन बाज़[25] उड़ते हुए वहॉ आये और उसके कुत्ते को खा गये। अब क्योंकि कुत्ता जहर खाने से मरा था तो वे भी उसके कुत्ते को खाते ही मर गये।

[25] Translated for the word “Hawk” – see its picture above.

उसी समय लड़के ने कुछ आवाजें सुनीं तो उसने देखा कि सात घुड़सवार उधर चले आ रहे थे। ये लोग डाकू थे और हालॉकि उनकी जेबों में बहुत सोना था पर उनके पास खाना नहीं था।

उन्होंने जब तीन बाज़ मरे पड़े देखे तो उन डाकुओं के कप्तान ने कहा — "हमें बहुत भूख लगी है। हम लोग यह मरे हुए बाज़ तो खा ही सकते हैं।"

सो उन डाकुओं ने लालची तरीके से वे तीनों बाज़ उठा लिये और उनको जल्दी जल्दी खाने लगे। उन बाज़ों को खाते ही वे भी मर गये क्योंकि वे बाज़ भी जहरीले हो चुके थे।

मनोइल ने सोचा "तीन बाज़ों ने मेरे कुत्ते को चुराया तो वे मेरे हो गये। और जब सात डाकुओं ने मेरे तीन बाज़ चुराये तो वे डाकू मेरे हो गये।"

यह कहते हुए उसने सातों डाकुओं की जेबों से सारा सोना निकाला और उन डाकुओं के कप्तान के कपड़े पहन लिये क्योंकि उन सबमें उसी के कपड़े सबसे अच्छे थे। फिर वह उसी कप्तान के घोड़े पर चढ़ा क्योंकि उन सबमें उसी का घोड़ा सबसे अच्छा था।

इस तरह वह उनके कपड़े पहन कर और उनके घोड़े पर सवार हो कर राजा के महल को चल दिया।

कुछ दूर चलने के बाद उसको प्यास लगी तो उसने पानी ढूँढने की कोशिश की पर उसको कहीं पानी नहीं मिला तो उसने अपने

घोड़े को बहुत तेज़ भगा दिया। इससे उसे पसीना आ गया सो उसी के पसीने से उसने अपनी प्यास बुझायी।

वह फिर महल की तरफ चल पड़ा। डाकुओं के कप्तान के कपड़े पहन कर और उसके बढ़िया घोड़े पर सवार हो कर महल में घुसने में उसको कोई परेशानी नहीं हुई। उसको अपनी पहेली बूझने के लिये तुरन्त ही राजकुमारी के सामने ले जाया गया।

राजकुमारी ने मनोइल की ऑखों में जंगल के बहुत सारे भेदों को देखा जो उसको उस बड़े शरीर वाले आदमी ने सिखाये थे।

राजकुमारी ने सोचा "हूँ, तो यह नौजवान मुझसे एक पहेली पूछने आया है। इसकी पहेली तो सुनने के लायक होनी चाहिये।"

अब तक पड़ोसी राज्यों के जितने भी राजकुमारों और कुलीन लोगों ने उससे पहेलियॉ पूछी थीं वे सब पहेलियॉ बेवकूफी से भरी हुई थीं। वह उन सबसे ऊब चुकी थी। वह हमेशा ही उनकी पहेलियॉ उनके पहेलियॉ पूरी तरह से कहने से पहले ही बूझ देती थी।

लड़के को देख कर वह बोली — "पूछो तुम कौन सी पहेली पूछना चाहते हो?"

लड़का बोला —

मैं घर से जेब भर कर चला पर वह बहुत जल्दी ही खाली हो गयी
पर वह फिर भर गयी
मैं घर से एक साथी के साथ चला था मेरी भरी हुई जेब ने मेरे साथी को मार दिया
मेरे मरे हुए साथी ने तीन को मारा तीन ने सात को मारा

उन सातों में से मैंने सबसे अच्छे को चुना
मैंने वह पानी पिया जो ऊपर से नहीं गिरा था
और मैं दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी के सामने खड़ा हूँ

राजकुमारी ने उसकी पहेली बहुत ध्यान से सुनी। फिर बोली — "इसे ज़रा दोबारा कहो।" मनोइल ने अपनी पहेली दोहरा दी।

राजकुमारी ने सोचा और सोचा पर वह उसका कोई हल नहीं सोच सकी। और केवल वही नहीं महल में कोई और भी उस्सकी पहेली को हल नहीं कर सका।

तो राजकुमारी ने उसी को अपनी पहेली का हल बताने के लिये कहा। जब मनोइल ने अपनी पहेली का हल बताया तो वह बोली — "लगता है कि "नोसा सिन्होरा"[26] खुद ने तुम्हें मेरे पास भेजा होगा। क्योंकि मैं कभी किसी बेवकूफ आदमी को तो अपना पति स्वीकार ही नहीं कर सकती थी।"

[26] Nossa Senhora – maybe she or he is some kind of god or goddess in Brazilian culture.

4 सुलतान की बेटी[27]

पहेलियों की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली है।

सुलतान मुहम्मद के एक ही बेटा था – अली। सुलतान मुहम्मद काफी बूढ़ा था और उसको ऐसा लगता था कि अब वह ज़्यादा दिन तक ज़िन्दा नहीं रह पायेगा।

सो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "मेरे बेटे, इससे पहले कि मैं मरूँ मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे यह दिखा दो कि तुम मेरा वारिस बनने के लिये अक्लमन्द भी हो और हिम्मती भी।

यह पैसे लो और यह घोड़ा लो और दुनियाँ घूमो पर एक साल से ज़्यादा मत लगाना क्योंकि मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और अपने मरने से पहले मैं तुमको देखना चाहता हूँ।"

अली ने वह पैसे लिये और घोड़ा लिया और घूमने निकल पड़ा। उसने अपने पिता का देश छोड़ा ही था कि उसका घोड़ा बीमार पड़ गया और कुछ ही दिनों में मर भी गया।

घोड़े के मरने के बाद अली पैदल ही चल पड़ा पर उसको इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी कि वह पैदल ही जा रहा था।

---

[27] The Sultan's Daughter (Story No 24) – a Malay-Indian folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Retold by ID du Plessis. Translated by Marguerite Gordon.

वह अनजानी जगहों में घूमता रहा और अपने चारों तरफ दुनियॉ की सुन्दरता देखता रहा – जंगलों में, पेड़ों में, और जंगली जीवों में। वह खुश था क्योंकि वह जवान था और ज़िन्दगी के लिये उसके मन में उत्साह था।

एक दिन तीसरे पहर में मौसम अचानक खराब हो गया और अली को कोई ठहरने की जगह ढूँढनी पड़ी। उसको पेड़ों से घिरा हुआ एक घर मिल गया।

पर जब वह उस घर के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह घर नहीं वह तो एक मस्जिद थी और वह मस्जिद भी खाली पड़ी थी। अली ने निश्चय किया कि वह अपनी रात वहीं गुजारेगा क्योंकि बाहर का मौसम उसको आगे बढ़ने के लिये ठीक नहीं लग रहा था।

सो वह उस मस्जिद में चला गया और सो गया। रात को सोते में वह कुछ धक्कों से जाग गया। वे धक्के इतने ज़्यादा ज़ोर के थे कि उसको लगा जैसे उसके नीचे का फर्श हिल गया हो।

वह चुपचाप उठा और यह जानने की कोशिश करने लगा कि वहॉ क्या हो रहा था पर सब जगह इतना अँधेरा था कि उसको कुछ दिखायी नहीं दिया। वे धमाके अभी भी हो रहे थे और कभी कभी उसको अपने आस पास कुछ लोग फुसफुसाते भी सुनायी पड़ रहे थे।

कुछ देर बाद दिन निकल आया। रोशनी में उसने देखा कि दो आदमी कुल्हाड़ी से मस्जिद का फर्श खोद रहे हैं। कुछ ही देर में

उन्होंने नीचे से एक आदमी का हड्डियों का ढाँचा निकाल लिया। अली को लगा कि यह तो उस मरने वाले की बेइज़्ज़ती थी।

अली अपने गुस्से को न रोक सका। उसने अपनी तलवार निकाली और उन आदमियों की तरफ दौड़ा। वह चिल्लाया — "तुम लोग अपना यह बुरा काम बन्द करो वरना मैं तुम्हारा गला काट दूँगा।"

जब उन कब्र के डाकुओं ने देखा कि वह तो अकेला था तो उनकी हिम्मत और बढ़ गयी।

उन्होंने कहा — "तुम्हें इससे क्या मतलब हम कुछ भी करें?"

अली बोला — "मैं अली हूँ सुलतान मुहम्मद का बेटा और हालाँकि मैं दूसरे देश में हूँ फिर भी मैं इस तरह की किसी मरे हुए आदमी की बेइज़्ज़ती बरदाश्त नहीं कर सकता।"

यह सुन कर वे लोग नम्रता से बोले — "यह उस मरे हुए आदमी की तो बेइज़्ज़ती हो सकती है पर हम तो केवल उसका बदला ले रहे हैं जो इस आदमी ने हमारे साथ किया। इसने हमसे बहुत सारा पैसा उधार लिया था और उसे बिना दिये ही मर गया।"

अली बोला — "अगर उसने ऐसा किया भी तो क्या उस आदमी के लिये यही सजा काफी नहीं है कि वह बेचारा मर गया? तुम्हें क्या लगता है कि इस पैसे के बारे में सोचते हुए क्या वह आत्माओं की दुनियाँ[28] में शान्ति से रह रहा होगा?"

[28] World of the Spirits

उनमें से एक ने शिकायती आवाज में कहा — "नहीं, शायद नहीं। पर इससे हमें हमारा पैसा तो वापस नहीं मिल जाता। उसको वह पैसा देने के बाद हम तो गरीब हो गये न? इसलिये अब उसको इस बात की सजा तो मिलनी ही चाहिये न?"

अली बोला — "इस तरह से बदला ले कर तो तुम अपनी ही आत्मा को नुकसान पहुँचा रहे हो। पर यह तो बताओ कि इस बेचारे के पास तुम्हारा कितना पैसा था?"

"**500** सिक्के।"

अली बोला — "अगर उसकी तरफ से मैं तुम्हें यह पैसा दे दूँ तो क्या तुम मुझसे वायदा करते हो कि तुम उसकी हड्डियाँ वापस उसकी कब्र में ठीक से रख दोगे और इस कब्र को बन्द कर दोगे?"

उनको इससे ज़्यादा और क्या चाहिये था। वे यह सुन कर बहुत खुश हुए। पर जब अली ने उनको उनका बताया पैसा दिया तो उसके अपने बटुए में कुछ भी नहीं बचा था।

अगले दिन अली गाँवों से हो कर ज़ोर ज़ोर से गाता हुआ चलता चला जा रहा था। उसका घोड़ा तो पहले ही मर चुका था और अब उसका बटुआ भी खाली था पर उसका दिल बहुत खुश था क्योंकि उसने एक मरे हुए आदमी का कर्ज निबटा दिया था।

जब वह ऐसे ही चलता चला जा रहा था तो उसके पीछे से एक अजनबी उसके साथ हो लिया। अली ने सोचा कि यह तो बड़ी

अजीब बात है। अभी अभी तो मैंने पीछे मुड़ कर देखा ही था तब तो मेरे पीछे कोई था नहीं अब यह मेरे पीछे कौन कहाँ से आ गया।

पर उस आदमी का चेहरा हँसमुख था और अली को वह देखते ही अच्छा लगा। अजनबी बोला — "अससलामे कुम[29]।"

अली बोला — "वाले कुम सलाम।"

अजनबी फिर बोला — "क्या मैं तुम्हारे साथ साथ चल सकता हूँ?"

अली बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। कहाँ जा रहे हो तुम?"

"कहीं कोई खास जगह नहीं। मेरा नाम रजब[30] है और मैं बस थोड़ी देर तुम्हारे साथ चलना चाहता हूँ।"

सो वे दोनों साथ साथ चल दिये और चलते चलते एक बिल्कुल ही काले रंग के पहाड़ के पास आ निकले। अली बोला — "देखो तो यह कितना काला पहाड़ है। क्या तुमको लगता है कि यह बुरा मौसम है इस वजह से यह इतना काला दिखायी दे रहा है?"

रजब बोला — "नहीं नहीं, यह बुरा मौसम तो नहीं है बस इस पहाड़ का रंग ही इतना काला है। यह एक अजीब पहाड़ है। देखो न, तुम अपने आप अकेले इस पहाड़ के पास कभी नहीं घूम सकते। लोग इसको जादूगरनी का घर[31] कहते हैं।"

---

[29] Normal greeting in Muslims

[30] Radjab – a Muslim name

[31] Witch's House

जैसे जैसे वे उस पहाड़ से आगे की तरफ चले तो उनको एक स्त्री मिली जो लकड़ी लिये जा रही थी। जब वह उनकी तरफ आ रही थी तो एक पत्थर से टकरा कर गिर पड़ी और उसके घुटने में मोच आ गयी। इस मोच की वजह से वह और आगे नहीं चल सकी।

अली बोला — "बेचारी स्त्री। हम इसकी कैसे सहायता कर सकते हैं?"

रजब ने अपनी जेब में हाथ डाला और बोला — "मेरे पास इस के लिये यह एक मरहम है।" कह कर उसने वह मरहम उस स्त्री के घुटने पर लगा दिया। तुरन्त ही वह अच्छा महसूस करने लगी।

वह स्त्री बोली — "बहुत बहुत शुकिया। इसके बदले में मैं आपके लिये क्या कर सकती हूँ?"

रजब बोला — "इसके लिये तुम्हें कुछ देने की जरूरत नहीं, पर अगर तुम चाहो तो तुम अपने ये दोनों बड़े पत्ते[32] मुझे दे सकती हो।"

उस स्त्री ने खुशी खुशी वे दोनों पत्ते रजब को पकड़ा दिये। फिर उसने अपना छोटा सा लकड़ी का गट्ठर उठाया और दोनों दोस्तों को विदा कहा और अपने रास्ते चली गयी।

जब वह स्त्री चली गयी तो अली ने रजब से पूछा — "तुम इन पत्तों का क्या करोगे?"

[32] Translated for the word "Bracken" – means a palm or fern like leaf

रजब बोला — "ये कभी भी काम आ सकते हैं।"

सूरज छिपने के समय वे एक सराय के पास आ पहुँचे। वहाँ वे रात बिताने के लिये रुक गये। शाम का खाना खाने के बाद वे सराय के दरवाजे पर आ कर बैठ गये।

पहाड़ों की ठंडी हवा चल रही थी। तभी एक फकीर आया और अपने जादू से उस सराय में ठहरने वालों का दिल बहलाने लगा। वह एक खास फकीर था क्योंकि वह अपनी लकड़ी की कठपुतलियों को बिना किसी धागे के चला सकता था।

मेहमान लोग बैठे बैठे उसका जादू देख ही रहे थे कि वहाँ एक कुत्ता आ गया और वह उस जादूगर की एक कठपुतली पर कूद पड़ा और उसका सिर उसके धड़ से अलग कर दिया।

जादूगर अपनी जादू की कठपुतली को ठीक नहीं कर सका सो जादूगर को गुस्सा आ गया।

वह उस कुत्ते को अपनी तलवार से मारना चाहता था पर रजब बीच में आ गया और बोला — "छोड़ो उस कुत्ते को। उस बेचारे को क्या पता कि क्या करना है और क्या नहीं करना। मैं तुम्हारी कठपुतली ठीक कर दूँगा। और मैं उसको ऐसे ठीक करूँगा कि न केवल वह चलने लगेगी बल्कि बोलने भी लगेगी।"

रजब ने अपनी वही पुरानी वाली छोटी सी मरहम वाली शीशी निकाली और उसमें से थोड़ा सा मरहम निकाल कर उस कठपुतली

की गरदन पर और उसके सिर पर मल कर उन दोनों को जोड़ दिया।

वह कठपुतली तो सचमुच ही चलने लग गयी और इतना ज़्यादा बोलने लग गयी कि वह फकीर खुद भी उसके बोलने से डर गया। फकीर ने खुश हो कर रजब से पूछा कि इसके बदले में वह उसको क्या दे सकता है।

रजब बोला — "इसके लिये तुम्हें कुछ देने की जरूरत नहीं, पर अगर तुम मुझे अपनी वह तलवार देना चाहो तो मैं उसे खुशी से ले लूँगा।" जादूगर ने उसको अपनी तलवार दे दी।

बाद में अली ने उससे पूछा — "तुम इस तलवार का क्या करोगे?"

रजब ने फिर पहले की तरह ही उसको जवाब दिया — "यह कभी भी काम आ सकती है।"

अगले दिन वे फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़े। कुछ दूर जाने पर उनको एक बड़े शहर की मीनारें नजर आयीं। रजब बोला — "चलो वहाँ चलते हैं।" सो दोनों उस शहर की तरफ चले।

जैसे ही वे शहर की चहारदीवारी के दरवाजे के पास आये अली को बहुत साफ साफ एक गाने की आवाज सुनायी पड़ी। उसने ऊपर देखा तो एक बरफ सी सफेद चिड़िया उनके ऊपर घूम रही थी।

वह बोला — "सुनो न यह चिड़िया कितना मीठा गा रही है।"

रजब बोला — "हॉ यह बहुत अच्छी चिड़िया है। यह एक धार्मिक गीत पोइजी[33] गा रही है।"

अभी रजब ने यह कहा ही था कि वह चिड़िया मर कर उनके पैरों में आ गिरी। रजब ने म्यान से अपनी तलवार निकाली और उस चिड़िया के पंख काट कर अपने थैले में रख लिये।

अली ने फिर पूछा — "तुम इन पंखों का क्या करोगे?"

और रजब ने फिर वही जवाब दिया — "कभी भी काम आ सकते हैं ये।"

उन्होंने देखा कि बहुत सारे लोग वहॉ बीच बाजार में इकट्ठा थे और एक सुन्दर जवान राजकुमारी के सामने अपना सिर झुका रहे थे। वह राजकुमारी अपने गहरे कत्थई रंग के घोड़े पर सवार उन लोगों के बीच से हो कर जा रही थी। सब उसकी सुन्दरता की तारीफ कर रहे थे।

अली ने पास में खड़े एक आदमी से पूछा — "घोड़े पर बैठी यह लड़की कौन है?"

"यह पोइटरी[34] है, सुलतान की बेटी। यह इस देश की न केवल सबसे ज़्यादा सुन्दर लड़की है बल्कि सबसे ज़्यादा बेरहम भी है। जो भी आदमी इससे शादी करना चाहता है पहले उसको इसकी

[33] Poisie
[34] Poetari

एक पहेली बूझनी पड़ती है। अगर वह उसका जवाब नहीं दे पाता तो यह उसको मौत के घाट उतरवा देती है।"

अली रजब से बोला — "मुझे पोइटरी पसन्द आयी। वह बेरहम हो सकती है पर उसने मेरा दिल चुरा लिया है। मैं कल इसके महल जा रहा हूँ और देखता हूँ कि मैं उसकी पहेली बूझ सकता हूँ या नहीं?"

रजब बोला — "ठीक है। पर हम लोगों को आज जल्दी ही सोने चले जाना चाहिये। अगर तुमको पोइटरी की पहेली बूझनी है तो तुम्हारा दिमाग बहुत ही तेज़ होना चाहिये।"

सोने जाने से पहले रजब ने अपना वह मरहम अली के माथे पर मल दिया और बोला कि इस मरहम को लगा कर तुम ठीक से सो पाओगे। और फिर वे दोनों सोने चले गये।

उस मरहम को लगाने के बाद अली ने जैसे ही तकिये पर सिर रखा तो वह तो गहरी नींद सो गया।

आधी रात से ठीक पहले रजब उठ गया। उसने उस चिड़िया के पंख अपने कन्धे से बाँधे, दोनों पत्ते अपने दाहिने हाथ में लिये और खिड़की में से उड़ कर महल में चला गया। वहाँ वह उस महल के बागीचे में जा कर उतर गया।

जब घड़ी ने रात के **12** बजाये तो पोइटरी अपनी खिड़की से अपने सुनहरे पंखों के साथ उड़ती हुई बाहर आयी और सीधी

जादूगरनी के पहाड़ की एक गुफा में घुस गयी। उसको यह पता ही नहीं था कि रजब उसके पीछे पीछे उड़ता हुआ चला आ रहा है।

जब वे उड़ रहे थे तो रजब ने उसकी पीठ पर एक पत्ते से मारा पर उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा क्योंकि उसने सोचा कि वह पत्ते की मार शायद बारिश की बूँदों का उसकी पीठ पर गिरना होगा।

गुफा के दरवाजे पर आ कर पोइटरी ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुल गया। जादूगरनी आग के पास बैठी थी और कुछ बहुत ही भयानक जानवर उसके पास बैठे थे और कुछ उसके ऊपर उड़ रहे थे।

जादूगरनी ने पूछा — "बोलो तुम्हारी क्या इच्छा है?"

राजकुमारी बोली — "बहुत दिन हो गये हैं कोई मेरी पहेली बूझने के लिये ही नहीं आया। लोग आना तो चाहते हैं और पहेली बूझना भी चाहते हैं पर मौत से डरते हैं।

मुझे मालूम है कि जल्दी ही कोई आयेगा पर मुझे डर है कि मेरी पुरानी पहेली का जवाब मुझसे कहीं खो गया है। कौन जानता है पर हो सकता है कि शायद कभी मैंने ही उसे सोते में बोल दिया हो।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है। अबकी बार अगर कोई आये तो तुम उसे यह बताने के लिये कहना कि तुम क्या सोच रही हो।"

राजकुमारी ने पूछा — "पर उस समय मैं क्या सोच रही होऊँगी?"

जादूगरनी बोली — "तुम अपने दस्तानों के बारे में सोच रही होगी।"

इतनी बात करके पोइटरी वहॉ से वापस लौट आयी और उसके पीछे पीछे रजब भी। उसने एक बार फिर उसने राजकुमारी को उस पत्ते से मारा और उसके बाद सोने चला गया। फिर तो वह सूरज निकलने के बाद ही उठा।

सुबह उठ कर जब अली महल जाने के लिये तैयार हो रहा था तो वह अली से बोला — "अगर पोइटरी तुमसे यह पूछे कि वह क्या सोच रही है तो कहना कि वह अपने दस्तानों के बारे में सोच रही है।"

अली महल आ पहुँचा। जब पोइटरी ने देखा कि एक सुन्दर नौजवान पहेली बूझने आ रहा है तो वह उसको तुरन्त ही चाहने लगी और मन ही मन सोचा कि अच्छा हो अगर वह उसकी पहेली ठीक से बूझ दे। क्योंकि फिर वह उससे शादी कर सकती है।

पर जब उसने वाकई उसकी पहेली को ठीक से बूझ दिया तो वह गुस्से से कूद पड़ी और चिल्ला कर बोली — "नहीं, यह नहीं हो सकता। तुमको मेरी पहेली बूझने के लिये दोबारा आना पड़ेगा। तुम इतनी असानी से मुझे नहीं पा सकते।"

उस रात रजब ने अली को फिर से गहरी नींद सुला दिया और खुद आधी रात को फिर से महल चल दिया। इस बार उसने उसे

पत्ते से उसके कन्धों पर मारा पर इस बार भी उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा और वह उसी गुफा तक उड़ती चली गयी।

वहॉ उस जादूगरनी ने उससे पूछा — "कैसा रहा उसका बूझना?"

"उसने तो ठीक बता दिया।"

"अच्छा? तुमको बहुत सावधान रहना चाहिये कि वह नौजवान तुम्हारा पति न बने।"

"तो मुझे तुम एक ऐसी पहेली दो जो वह बूझ ही न सके।"

जादूगरनी बोली — "उससे तुम फिर यही पूछना कि तुम क्या सोच रही हो? और उस समय तुम अपने सिर के सुनहरी ताज के बारे में सोच रही होगी।"

पोइटरी फिर से उड़ कर अपने महल में जा पहुॅची पर रजब फिर से ठीक उसके पीछे था और उसने फिर उस पत्ते से उसको मारा। और इस बार भी उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

अगली सुबह जब अली फिर महल जाने के लिये तैयार हुआ तो रजब ने उससे कहा — "अगर पोइटरी तुमसे यह पूछे कि वह क्या सोच रही है तो बोलना कि वह अपने सिर के सुनहरी ताज के बारे में सोच रही है।"

अली एक बार फिर राजकुमारी के महल की तरफ चल दिया। राजकुमारी एक राज सिंहासन पर अपने पिता के पास बैठी हुई थी। वह सोच रही थी कि इस बार वह यकीनन ठीक जवाब नहीं दे

पायेगा पर एक बार फिर सही जवाब सुन कर वह गुस्से से भर उठी।

वह गुस्से में बोली — "तुमको फिर से आना पड़ेगा ओ नौजवान। मुझे पाना इतना आसान नहीं है।"

इस बार अली बोला — "आपकी शर्त तो यही थी न कि मुझे केवल एक बार ही आपकी पहेली बूझनी थी पर मैंने तो आपकी पहेली दो बार बूझ दी है। अब यह तो नाइन्साफ़ी है कि आप मुझसे शादी नहीं कर रही हैं। पर आपको नाउम्मीद न करने के लिये, ओ पोइटरी, मैं फिर आऊँगा।"

उस रात रजब ने पोइटरी का फिर से पीछा किया और अबकी बार उसके कन्धों पर अपने उस पत्ते से इतना मारा कि उसके कन्धों से खून बहने लगा और वह और आगे नहीं उड़ सकी।

पर फिर भी वह अपनी उस जादूगरनी के पास तक पहुँच गयी जिसके पास वह जाया करती थी। उसने उससे कहा — "अबकी बार तुम मुझे ऐसी पहेली दो कि इस धरती का कोई भी आदमी उसको न बूझ सके।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है। अबकी बार तुम मेरे सिर के बारे में सोचना। यह वह कभी भी नहीं बता सकेगा।"

पोइटरी वहाँ से उड़ी तो अपने कमरे में आ कर अपने बिस्तर पर धम्म से गिर पड़ी। अबकी बार रजब ने उसको इतना मारा था कि वह परेशान थी।

वह बोली — "मैं अब उस चुड़ैल के पास फिर कभी नहीं जाऊँगी।" और उसने अपने सुनहरे पंख तोड़ कर फेंक दिये।

लेकिन रजब उस जादूगरनी के घर की तरफ उड़ा और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया।

"अन्दर आ जाओ।" जादूगरनी ने गुफा के अन्दर से ही कहा पर जब कोई अन्दर नहीं घुसा तो उसने यह देखने के लिये अपना सिर दरवाजे के बाहर निकाला कि किसने उसका दरवाजा खटखटाया।

रजब बाहर उसके लिये तैयार खड़ा था। जैसे ही उसने अपना सिर दरवाजे के बाहर निकाला तो उसने तलवार के एक ही वार से उसका सिर काट दिया और उसको अपने थैले में रख लिया। फिर वह अपने घर वापस लौट गया और जा कर अली के पास सो गया।

अगली सुबह जब अली फिर महल जाने को तैयार हुआ तो रजब ने कहा — "लो यह थैला अपने साथ लेते जाओ और जब पोइटरी तुमसे यह पूछे कि वह किसके बारे में सोच रही है तो इस थैले में जो कुछ भी रखा है उसे निकाल कर उसको दिखा देना कि वह इसके बारे में सोच रही है।"

उस सुबह पोइटरी बड़ी बेचैन सी अपने पिता के पास बैठी हुई थी। उसके कन्धे बहुत दर्द कर रहे थे और वह इन पहेलियों के बूझने से तंग आ चुकी थी।

जब अली वहॉ पहुॅचा तो पोइटरी ने उससे फिर पूछा कि वह किसके बारे में सोच रही है। इस बार अली कुछ नहीं बोला तो जल्लाद ने उसको मारने के लिये अपनी कुल्हाड़ी उठायी और पोइटरी की तरफ देखा।

लेकिन इससे पहले कि वह अपने जल्लाद को उसके मारने का इशारा करती अली ने उस जादूगरनी का सिर उस थैले में से निकाला और उसको दिखा दिया। पोइटरी खुशी के मारे उससे जा कर लिपट गयी।

वह अली से बोली — "अब तुमको और किसी पहेली बूझने की जरूरत नहीं है। मैं तुमसे ही शादी करूॅगी।"

सुलतान और उसके लोग भी यह देख कर बहुत खुश हुए कि आखिर राजकुमारी को कोई लड़का तो मिल गया था जिससे वह शादी कर सकती थी। तुरन्त ही शादी का इन्तजाम हुआ।

पर जब अली ने रजब से उसको अपना बैस्टमैन[35] बनने के लिये कहा तो वह केवल मुस्कुरा दिया और उसने ना में अपना सिर हिला दिया।

वह बोला — "जब तक तुम दोनों रहने के लिये महल में जाओगे तब तक तो मैं यहॉ से बहुत दूर अपनी आराम करने की

[35] In North America and in Christian marriages, the Bestman is one of the male attendants to the groom in a wedding ceremony. In Britain, a similar role is performed by an "usher".

जगह पहुँच चुका होऊँगा। अब जब कि मैंने अपना कर्जा चुका दिया है तो तुम यह भी जान गये होगे कि मैं कौन हूँ।"

अली ने आश्चर्य से पूछा — "पर तुम हो कौन? और तुम किस कर्जे की बात कर रहे हो?"

रजब बोला — "मैं उस आदमी की आत्मा हूँ जिसकी हड्डियों की तुमने कब्र में से हटाने में रक्षा की थी। अच्छा, अलविदा मेरे दोस्त, मैं तुम्हारे पास इससे ज़्यादा नहीं रुक पाऊँगा।" इससे पहले कि अली कुछ बोलता रजब तो गायब ही हो गया।

एक साल पूरा होने को आ रहा था सो वहाँ से अली अपने पिता के पास पहुँचा और उसको वह सब बताया जो कुछ उसके साथ हुआ था।

सुलतान मुहम्मद अली के साथ पोइटरी के देश आया और उन दोनों की शादी में शामिल हुआ। उसके बाद उसने अपनी गद्दी अपने बेटे अली को दे दी और शान्ति से मर गया।

5 गुलाम्बरा और सुलाम्बरा[36]

पहेलियों की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि या तो था और या फिर नहीं था एक अन्धा राजा राज्य करता था। राज्य के सारे डाक्टरों ने अपनी पूरी कोशिश कर ली थी पर वे राजा की ऑखों की रोशनी नहीं ला सके थे।

आखिर एक डाक्टर बोला — "फलॉ फलॉ सागर में एक खून के रंग जैसी लाल मछली है। अगर उसको पकड़ लिया जाये और उसको मार कर उसका खून आपकी ऑखों पर छिड़का जाये तो वह शायद आपका कुछ भला कर सके।

वह आपकी ऑखों की रोशनी वापस ला सके। अगर उससे ऐसा नहीं होता तो फिर और कोई इलाज नजर नहीं आता।"

यह सुन कर राजा ने अपने राज्य के सारे मछियारों को बुलाया और उनको हुकुम दिया कि वे वहॉ भी जायें जहॉ उनको जाना है और वहॉ भी जायें जहॉ उनको नहीं जाना है और ऐसी मछली ढूँढें और उसे पकड़ कर यहॉ लायें। मैं उनको बहुत सारा इनाम दूँगा।

यह सुन कर सब मछियारे वैसी मछली के ढूँढने चले गये।

---

[36] Gulambara and Sulambara (Tale No 8) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

कुछ समय गुजर गया। एक बूढ़े मछियारे ने वैसी ही लाल मछली पकड़ी और उसको राजा के पास ले कर आया। राजा उस समय सो रहा था। कोई उसको जगाने की हिम्मत नहीं कर सका। सो वह मछली पानी से भरे एक बरतन में रख दी गयी।

उसी समय राजा का बेटा अपनी पढ़ाई से वापस लौटा तो उसने पानी से भरे बरतन में एक लाल मछली तैरती देखी। उसको वह बहुत अच्छी लगी।

उसने उसको अपने हाथ में उठा लिया और प्यार से उसको सहलाया और अपने नौकरों से पूछा — "तुम्हें पानी के बरतन में रखी हुई इस सुन्दर सी मछली से क्या चाहिये।"

उन्होंने जवाब दिया — "यह मछली आपके पिता के लिये बहुत अच्छी है। इसको मारा जायेगा और इसका खून आपके पिता की ऑखों पर छिड़का जायेगा। और इससे उनकी ऑखों की रोशनी वापस आ जायेगी।"

राजकुमार ने पूछा — "पर इसको मारना क्या पाप नहीं है।" और यह कह कर राजकुमार ने वह मछली पानी में से निकाली और मैदान में बहती एक नदी की तरफ ले गया और उसमें डाल दी। इस तरह से उसने उसको आजाद कर दिया।

कुछ देर बाद राजा जागा तो उसके वजीर ने कहा — "योर मैजेस्टी, एक बूढ़ा मछियारा आपको लिये खून जैसी लाल मछली ले कर आया था पर आपके बेटे ने जो अभी अभी पढ़ कर आया था

उसको वहॉ से आजाद कर दिया। उन्होंने उसको नदी में फेंक दिया।"

राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उसने अपने बेटे को उसके घर से बुला भेजा और कहा — "तू जा। मैं अपने आप ठीक हो जाऊॅगा। तू तो राज्य में याद भी नहीं किया जायेगा। मैं अपनी ऑखों से तुझे देख भी नहीं सकूॅगा। मुझे तो अब तेरी यह बुरी आवाज भी नहीं सुननी। तू जा।"

राजकुमार यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ। वह उठा और उठ कर वहॉ से चला गया। वह चलता गया चलता गया। उसको यही नहीं पता था कि वह कहॉ जा रहा है।

रास्ते में एक नदी पड़ी। वह बहुत थक गया था सो वह उस नदी के किनारे सुस्ताने के लिये बैठ गया। लो कुछ देर में उसी की उम्र का एक लड़का नदी में से बाहर आया।

वह राजकुमार के पास आया उसने उसको नमस्ते की और पूछा — "तुम कहॉ से आ रहे हो और तुम परेशान क्यों हो।"

राजकुमार ने उसको अपनी सारी कहानी बता दी। उसके नये साथी ने कहा — "मैं भी अपने घर से बहुत परेशान हूॅ सो चलो हम दोनों भाई बन जाते हैं और दोनों एक साथ रहते हैं।" राजकुमार राजी हो गया और वे दोनों एक तरफ चल दिये।

वे लोग कुछ दूर ही चले थे कि एक शहर आ गया। वे वहॉ रहने लगे। अगले दिन राजकुमार के नये भाई ने राजकुमार से कहा

— "तुम घर पर ही रहो। घर के बाहर मत जाना कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हें खा जायें क्योंकि यहॉ का यही रिवाज है।"

राजकुमार ने उससे वायदा किया कि वह घर से बाहर बहीं निकलेगा। और वह सारे दिन घर में ही बैठा रहा। दूसरा लड़का सारे दिन शहर में रहा। शाम को वह घर लौटा तो उसके हाथ में एक चादर भर कर खाने का सामान था।

इस तरह से रहते रहते कुछ दिन बीत गये। राजकुमार सारे दिन घर में रहता और उसका मुॅहबोला भाई बाहर से खाने पीने का सामान लाता।

आखिर राजकुमार ने एक दिन सोचा "यह तो बड़े शरम की बात है कि मेरा भाई तो रोज बाहर खाना पीना लेने जाता है और मैं कुछ नहीं करता। मैं कुछ क्यों नहीं करता। मैं इतना आलसी क्यों हूॅ। मैं भी बाहर जाऊॅगा और कुछ करूॅगा।"

और फिर ऐसा ही हुआ। एक दिन राजकुमार शहर में चला गया। वह इधर से उधर घूमता रहा। घूमते घूमते एक जगह उसने देखा कि उसका भाई जमीन पर पालथी मारे बैठा था।

उसके पैरों के पास एक रूमाल बिछा हुआ था। उसके हाथों में एक तार वाला बाजा था जो वह बजा रहा था और उसके साथ साथ अपनी मीठी आवाज में कुछ गा भी रहा था। जो कोई उधर से गुजरता वह उसके रूमाल में कुछ पैसे डालता जाता।

राजकुमार सुनता रहा सुनता रहा फिर बोला — "नहीं यह नहीं होना चाहिये। इस बात का मुझसे कोई मतलब नहीं है।" कह कर वह वहॉ से पलटा और चल दिया।

पास में ही उसको एक मीनार दिखायी दी। उसके बाहर की तरफ एक दीवार थी और उसकी चोटी पर आदमियों के सिर कतारों में लगे हुए थे। उनमें से कुछ चेहरों पर झुर्रियॉ पड़ी हुई थीं और कुछ पुराने थे जिनमें से सड़ने की बू आ रही थी और कुछ वहॉ अभी टॉगे गये थे।

वह उनको देखता रहा देखता रहा। जब उसकी कुछ समझ में नहीं आया तो उसने एक आदमी से पूछा — "यह किसकी मीनार है। और ये आदमियों के सिर इस तरह से कतार में क्यों लटके हुए हैं।"

आदमी ने जवाब दिया — "इस मीनार में एक लड़की रहती है। वह इतनी सुन्दर है जैसे सूरज। किसी भी राजा का बेटा उसका हाथ मॉग सकता है।

पर वह उससे एक सवाल पूछती है और अगर वह उसका जवाब नहीं दे पाता तो वह उसका सिर कटवा देती है। और अगर वह उसके सवाल का जवाब दे दे तो वह उससे शादी कर सकता है। अभी तक कोई उसके सवाल का जवाब नहीं दे पाया है सो ये सब उन्हीं आदमियों के सिर हैं।"

राजकुमार ने बहुत सोचा बहुत सोचा और फिर यह तय किया "मैं उसके पास जरूर जाऊँगा और मैं उस लड़की का हाथ शादी के लिये माँगूगा। इससे मैं यह जान जाऊँगा कि मेरी किस्मत में क्या है। हालाँकि जो होना है वह तो हो कर ही रहेगा। पर वह मुझसे क्या पूछ सकती है यह तो मैं नहीं जानता।" सो वह उठा और उधर ही चल दिया।

वह मीनार में गया उस सूरज जैसी राजकुमारी से मिला और उससे उसका हाथ माँगा।

वह बोली — "यह तो ठीक है कि तुम मुझसे शादी करना चाहते हो पर पहले मुझे तुमसे एक सवाल पूछना है। अगर तुम मेरे सवाल का जवाब दे दोगे तो मैं तुम्हारी हूँ और अगर नहीं दे पाये तो मै तुम्हारा सिर कटवा दूँगी।"

राजकुमार बोला — "ऐसा ही सही।"

राजकुमारी बोली — "अच्छा तो यह बताओ कि गुलाम्बरा और सुलाम्बरा कौन हैं।"

राजा के बेटे ने अपने मन में सोचा "यह तो में जानता हूँ कि गुलाम्बरा और सुलाम्बरा फूलों के नाम हैं पर मैंने अपनी ज़िन्दगी में यह कभी नहीं सुना कि ये नाम किसी आदमी के भी हैं। अब मैं क्या बताऊँ कि ये कौन हैं।"

उसने राजकुमारी से तीन दिनों की मोहलत माँगी और घर चला गया। घर जा कर उसने अपने भाई को बताया कि उस दिन क्या हुआ था।

फिर वह बोला — "अगर अब तुम मेरी सहायता नहीं कर सकते तो तीन दिन बाद मेरा यह सिर कट जायेगा।"

उसके भाई ने उसको डॉटा — "क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम घर में अन्दर ही रहो। यह बहुत ही बुरा शहर है। और तुम माने नहीं।"

लेकिन फिर उसने उसको तसल्ली देते हुए कहा — "ठीक है जाओ एक पैनी का खुशबूदार गोंद और एक मोमबत्ती खरीद लाओ। मेरी एक दादी हैं। मै तुमको उनके पास ले जाऊँगा और इस मामले में वह तुम्हारी सहायता करेंगी।

पर जब मेरी दादी हमको देख रहीं हो तो उस समय तुम वह गोंद और मोमबत्ती उनको दे देना नहीं तो वह तुमको खा जायेंगी।"

सो राजकुमार ने एक पैनी का खुशबूदार गोंद और एक मोमबत्ती खरीदी और दोनों उस लड़के की दादी के पास चल दिये। दादी दरवाजे पर ही खड़ी हुई थी। राजकुमार ने तुरन्त ही वह गोंद और मोमबत्ती दादी को दे दी।

राजकुमार के भाई की दादी ने पूछा — "यह क्या है और तुम्हारे साथ क्या मामला है।"

राजकुमार का भाई आगे बढ़ा और उसने उसको सब कुछ विस्तार से बताया और कहा — "यह मेरा बहुत अच्छा भाई है और आपको इसकी सहायता जरूर करनी चाहिये।"

बुढ़िया ने राजकुमार से कहा — "ठीक है। मै तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।"

राजकुमार उसकी पीठ पर बैठ गया और वह बुढ़िया ऊँची और बहुत ऊँची उड़ चली। पर पलक झपकते ही वह नीचे गहराइयों उतर गयी।

वहाँ वह उसको एक शहर में ले गयी। वहाँ वे लोग बाजार में घुसने ही वाले थे कि वहाँ जा कर बुढ़िया ने एक दूकानदार की तरफ इशारा करते हुए उससे कहा — "तुम इस दूकानदार को देख रहे हो न। जाओ और इस दूकानदार के यहाँ जा कर काम करो।

पर जब शाम को जब यह दूकानदार अपना काम खत्म करके अपने घर जाये तो उससे कहना कि वह तुमको भी अपने साथ ले जाये। वह तुमको अपनी दूकान में किसी भी हालत में न छोड़े।

जब तुम उसके साथ जाओगे तब तुम गुलाम्बरा और सुलाम्बरा की कहानी जान पाओगे। फिर जब तुमको मेरी जरूरत हो बस एक सीटी बजा देना और मैं हाजिर हो जाऊँगी।"

राजकुमार ने ठीक वैसा ही किया जैसा कि उस बुढ़िया ने उससे करने के लिये कहा था। वह उस कसाई की दूकान पर गया और उसके साथ काम करने लगा।

शाम को जब कसाई घर जाने लगा तो वह बोला — "मैं इस जगह मैं एक अजनबी हूँ मेहरबानी करके मुझे यहाँ अकेला दूकान में मत छोड़ें मुझे डर लगता है। मुझे आप अपने साथ अपने घर ले चलिये।"

कसाई ने बहुत मना किया कि वह उसको अपने साथ अपने घर नहीं ले जा सकता पर राजकुमार तब तक उससे जिद करता रहा जब तक वह उसको अपने घर ले जानो के लिये राजी नहीं हो गया। सो मजबूरन कसाई उसको अपने साथ ले कर घर चला गया।

वे एक दीवार के पास आये, वहाँ एक दरवाजा खोला, वे अन्दर गये और दरवाजा बन्द हो गया। उसके बाद एक और दीवार थी। वे उसमें से भी हो कर गये और वह भी उनके अन्दर पहुँचते ही बन्द हो गयी। इस तरह से वे नौ दीवारों से हो कर गुजरे। उसके बाद ही वे उस कसाई के घर में पहुँचे।

घर में पहुँच कर कसाई ने एक आलमारी खोली उसमें से एक स्त्री का सिर निकाला और लोहे का एक कोड़ा निकाला। उसने उस सड़े हुए सिर को नीचे रखा और एक कोड़ा मारा। फिर वह उसको तब तक कोड़े मारता रहा जब तक कि वह सिर बिल्कुल ही खत्म नहीं हो गया।

राजकुमार ने जब यह देखा तो वह तो बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया। वह उस कसाई से बिना पूछे न रह सका — "अगर आप

बुरा न माने तो क्या में आपसे पूछ सकता हूँ कि आप यह क्या कर रहे थे। यह सिर तो वैसे ही सड़ा हुआ था फिर आप इसे क्यों मार रहे थे। और यह सिर किसका है।"

कसाई बोला — "मैं इस बात को किसी को नहीं बताता यह मेरा अपना भेद है। पर जब भी मैं यह बात जिस किसी को भी बताऊँगा उसका सिर धड़ से अलग हो जायेगा।"

राजकुमार बोला — "फिर भी मैं यह बात जानना चाहूँगा।"

कसाई उठा उसने एक तलवार उठायी अपने आपको तैयार किया और राजकुमार से बोला — "मेरी एक पत्नी थी जो इतनी सुन्दर थी कि सूरज भी उसके मुकाबले में कुछ नहीं था। उसका नाम गुलाम्बरा था। मैं इसी लिये उसको इन नौ तालों के अन्दर रखता था।

मैं उसको इतनी सँभाल कर रखता था कि स्वर्ग की हवा भी उसको नहीं छू सकती थी। वह जो कुछ भी चाहती थी मैं उसको वह तुरन्त ही दे दिया करता था। मैं उसे अपने प्यार की हद तक प्यार करता था और उस पर विश्वास भी करता था। एक दिन उसने मुझसे कहा भी कि वह भी दुनियाँ में केवल मुझे ही प्यार करती थी।

उन दिनों मेरा एक नौकर था जिसका नाम सुलाम्बरा था। मेरी पत्नी ने मुझे धोखा दिया वह मेरे उस नौकर से प्यार करने लगी। एक बार मैंने उन दोनों को एक साथ देख लिया तो उनको पकड़

लिया। मैंने उन दोनों को दो आलमारियों में अलग अलग बन्द कर दिया।

जब मैं अपना काम ख़त्म करके घर आता तो उनको एक एक करके उन आलमारियों में से बाहर निकालता और खूब मारता। मैंने कल उन दोनों को इतना मारा इतना मारा कि सुलाम्बरा तो कल ही मर गया पर गुलाम्बरा का सिर अभी भी बच गया। और गुलाम्बरा का सिर आज तुम्हारे सामने ही ख़त्म हो गया।"

कहानी ख़त्म हो गयी थी सो कसाई ने अपनी तलवार सँभाली और बोला — "अब मैं अपनी धमकी पूरी करने जा रहा हूँ। सो अब तुम यहाँ आओ और मैं अब तुम्हारा सिर धड़ से अलग करता हूँ।"

राजकुमार उससे दया की भीख माँगता हुआ बोला — "मुझे थोड़ा सा समय दो। मैं दरवाजे की तरफ जा कर ज़रा भगवान की प्रार्थना कर लूँ।"

कसाई ने सोचा "इसमें तो मेरा कोई नुकसान नहीं है कि यह मरने से पहले दरवाजे के पास जा कर भगवान की प्रार्थना कर ले क्योंकि यह तो पक्की बात है कि यह नौ दरवाजे तो किसी हालत में खोल ही नहीं सकता।"

राजकुमार दरवाजे के पास गया और जा कर सीटी बजायी। तुरन्त ही वह बुढ़िया वहाँ आ गयी। राजकुमार उसकी पीठ पर बैठा और वह बुढ़िया उसको ले कर उड़ चली।

राजकुमार सीधे राजकुमारी के महल पहुँचा और उस सूरज जैसी राजकुमारी को गुलाम्बरा और सुलाम्बरा की कहानी सुनायी।

राजकुमारी तो यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गयी। अब वह अपनी शर्त के मुताबिक उससे शादी करने को तैयार थी। सो उनकी शादी हो गयी। राजकुमारी ने अपना सारा सामान उठाया और राजकुमार के साथ उसके पिता के राज्य जाने के लिये तैयार हो गयी।

जब वे नदी के किनारे आये तब उसका वह मुँहबोला भाई आया और उससे बोला — "तुम्हारी मुसीबत में मैंने तुमसे अपनी दोस्ती निभायी। और अब जब कि तुम खुश हो तो क्या हमारी दोस्ती टूट जायेगी।

जे कुछ तुम्हें मिला वह तुम्हें मेरी दोस्ती की वजह से मिला अब तुम्हें उसे मुझसे बॉटना चाहिये।"

राजकुमार ने सब कुछ आधा आधा बॉट दिया फिर भी उसका मुँहबोला भाई सन्तुष्ट नहीं था। वह बोला — "मेरे साथ यह सब बॉटना तो ठीक है पर तुम्हारे पास तो राजकुमारी भी है। उसका क्या होगा।"

राजकुमार उठा और उसने अपने हिस्से का सामान भी उसको दे दिया। पर उसका मुँहबोला भाई उसको लेने के लिये तैयार नहीं था। वह उससे बोला — "अगर तुम्हें मुझसे अपनी दोस्ती कायम

रखनी है तो तुम्हें मुझसे यह राजकुमारी भी बॉटनी पड़ेगी जो तुम्हारी सबसे ज़्यादा प्यारी चीज़ है।"

कहते हुए उसने राजकुमारी का हाथ पकड़ा और उसको एक पेड़ से बॉध दिया। फिर उसने अपनी तलवार निकाली और उसको मारने ही वाला था कि डरी हुई राजकुमारी के मुॅह से एक हरे रंग की धारा निकल पड़ी। भाई ने फिर से अपनी तलवार उठायी पर फिर से वही हुआ। उसने तीसरी बार तलवार उठायी पर फिर भी वही हुआ।

यह देख कर वह मुॅहबोला भाई राजकुमारी के पास आया उसे खोला और उसे राजकुमार को सौंप दिया और राजकुमार से बोला — "हालॉकि राजकुमारी बहुत सुन्दर थी फिर भी वह जहरीली थी और जल्दी या देर से तुम्हें मार डालती। अब उसका सारा जहर निकल गया है सो अब तुमको उससे डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।

अब तुम जा सकते हो भगवान तुम्हारी रक्षा करे। जहॉ तक इन सब चीज़ों का सवाल है ये सब तुम्हारी हैं। मुझे ये सब नहीं चाहिये। भगवान तुम्हें शान्तिपूर्वक रखे।"

फिर उसने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला और उसे राजकुमार को देते हुए कहा — "जब तुम घर पहुॅच जाओ तो इस रूमाल से अपने पिता की ऑखें पोंछ देना वह देखने लग जायेंगे।

मैं वही मछली हूँ जो तुम्हारे महल में पानी के बरतन में पड़ी हुई थी और जिसे तुमने आजाद किया था। इससे तुम यह जान लो कि किसी के ऊपर की गयी दया कभी खाली नहीं जाती।"

इतना कहने के बाद राजकुमार का मुँहबोला भाई वहीं गायब हो गया। राजकुमार एक बार फिर आश्चर्य में पड़ गया। इससे पहले कि वह अपने उस भाई का धन्यवाद करता वह तो गायब ही हो चुका था।

आखिर जब वह अपने आपे में आया तो वह अपनी पत्नी के साथ अपने पिता के पास चला गया। उसने अपने भाई का दिया हुआ रूमाल अपने पिता की ऑखों पर रखा तो तुरन्त ही राजा की ऑखों की रोशनी वापस आ गयी।

जब उसने अपने बेटे और बहू को देखा तो वह तो इतना खुश हो गया कि उसकी ऑखों में तो ऑसू ही आ गये। फिर उसके बेटे ने उसको अपनी वह सारी कहानी सुनायी जो कुछ भी उसके साथ घटा था।

6 एक राजा और साधु[37]

इस लोक कथा में पहेली जैसी बूझने की तो कोई चीज़ नहीं है पर फिर भी आदमी की चतुराई का इम्तिहान है। तो लो पढ़ो यह लोक कथा जिसमें एक आदमी अपनी चतुराई से एक राजा से इनाम जीता।

एक बार की बात है कि पूर्व के एक राज्य में एक राजा राज्य करता था जिसका नाम था अली। वह बहुत ही खुशमिजाज और खुशदिल आदमी था। अली को अली की प्रजा बहुत प्यार करती थी और अली भी अपनी प्रजा को बहुत प्यार करता था। शाह अली उनके साथ ऐसे बरताव करता था जैसे वे सब उसके बच्चे हों।

वह उनके त्यौहारों को मनवाता। वह उनके लिये मुकाबलों का इन्तजाम करता। सबसे अच्छी कविता लिखने पर उनको इनाम देता। शाह को खुद को अरब के साहित्य की बहुत अच्छी जानकारी थी और वह एक बहुत ही विद्वान आदमी माना जाता था।

इसके अलावा वह बातें बहुत अच्छी करता था और एक हॅसोड़िया भी था। वह अपनी प्रजा से कई हॅसी की पहेलियॉ भी

[37] The King and the Sage (Tale No 4 – Gurian Tales) – a folktale from Georgia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

पूछता था। जो उसकी पहेलियॉ बूझ देता था उसको इनाम भी मिलता था।

एक बार शाह के नौकरों ने जनता को बताया कि शाह अली ने उस आदमी को **300** सोने की मुहरें देने का वायदा किया है जो कोई उनसे कोई ऐसा सवाल पूछेगा जिसका जवाब होना चाहिये "यह तो हो ही नहीं सकता।"

शाह की इस मुनादी ने तो देश की जनता में, बूढ़े जवान बच्चे स्त्री पुरुष सबमें खलबली मचा दी। सारे ही लोग कोई ऐसा सवाल सोचने में लग गये जिसका जवाब हो "यह तो हो ही नहीं सकता।"

आखिर वह दिन भी आ पहुॅचा जिस दिन यह मुकाबला होना था। शहर का चौराहा भरा हुआ था। सारे लोग उत्सुकता से मुकाबला शुरू होने का इन्तजार कर रहे थे।

ठीक समय पर शाह अली वहॉ आये। उनके चारों तरफ बहुत चमकीले शानदार रक्षक उनकी सुरक्षा के लिये थे। उनके आते ही संगीत बजना शुरू हो गया। शाह अली ने आ कर उन सबका हाथ हिला कर स्वागत किया।

स्वागत के बाद शाह अली अपनी राजगद्दी पर बैठ गये जो उस मंच के सामने पड़ी हुई थी जिस पर लोगों को आ कर खड़े हो कर शाह अली से अपने सवाल पूछने थे।

शाह अली के दूतों ने वहॉ बैठे लोगों को शाह अली की चुनौती सुनायी तो एक बातूनी आदमी मंच पर चढ़ा और उसने शाह को

बताया — "शाह जी एक आदमी अभी अभी शहर में आया है और वह एक बहुत ही आश्चर्यजनक खबर ले कर आया है।

आज सुबह सवेरे आपके शहर से दूर करीब बीस वर्स्ट[38] दूर चॉद आसमान से नीचे जमीन पर गिर गया है और उसने बाईस गॉव जला कर राख कर दिये हैं।"

यह सुन कर शाह अली ने कुछ पल सोचा और फिर बोले — "यह तो हो सकता है।" यह सुन कर शहर के सारे लोग हॅस पड़े और सबकी हॅसी के बीच वह आदमी बैठ गया।

इसके बाद एक दरबारी आया। यह दरबारी शाह का डाक्टर भी था। वह बोला — "जहॉपनाह। आपके हरम में आज एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात हुई। आपकी पहली और सबसे प्यारी पत्नी जुलेखा ने एक ऐसे सूअर को जन्म दिया है जिसके शरीर पर बहुत सारे कॉटे हैं।"

शाह अली ने फिर कुछ पल सोचा और बोले — "हॉ यह तो हो सकता है।" डाक्टर शरम के मारे मंच से नीचे उतर गया और वहॉ बैठे लोग पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से हॅस पड़े।

उस डाक्टर के बाद एक ज्योतिषी आया। वह बोला — "ओ भले शाह। मैं जब सितारों की चाल देख रहा था तो मैंने आपके बारे में एक बहुत दुख की खबर नोट की।

[38] Verst – is an old Russian unit of measurement of length, 1 Verst = .66 miles

वह यह कि बहुत जल्दी ही आपके बकरे के से सींग उग आयेंगे, तेंदुए[39] के पंजे जैसे पंजे निकल आयेंगे और आप बोल नहीं पायेंगे। आप हम लोगों के पास से जंगल भाग जायेंगे। वहाँ आप ठीक सात साल और तीन महीने तक रहेंगे।"

शाह ने पहले लोगों की तरह से उसको भी यही जवाब दिया — "यह तो हो सकता है।" और वह भी हँसती हुई जनता की हँसी के बीच गायब हो गया।

दुनियाँ को खुश करने के लिये यह मुकाबला सारा दिन चलता रहा, फिर अगले दिन भी और फिर अगले दिन भी। अभी तक कोई ऐसा आदमी ऐसा कुछ नहीं बोला जिसका जवाब शाह अली यह दे सकें कि "यह तो नहीं हो सकता।"

फिर तीसरे दिन, आखिरी दिन, शाह के सामने अगला आदमी आया – नसरुद्दीन[40], बातचीत में एक बहुत ही चतुर आदमी। वह फटे कपड़े पहने था। वह अपने साथ दो मिट्टी के बरतन घसीटे लिये शाह अली की तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

आ कर उसने शाह अली से कहा — "कमान्डर की जय हो आपका नाम सारे संसार में फैले। आप सौ साल राज करें। आपकी प्रजा का आपके ऊपर भरोसा और प्यार हर साल बढ़े।"

शाह अली बोले — "यह तो हो सकता है।"

---

[39] Translated for the word "Panther".

[40] The Mulla Nasr-Eddin is the hero of hundreds of Eastern (Turkish) witty tales.

"आपकी प्रजा का भरोसा आपके ऊपर बहुत ज़्यादा है यह एक सच से साबित होता है जो मैं अभी बताने जा रहा हूँ। आप उसको बेशक सुनने की कोशिश करेंगे।"

"यह तो हो सकता है।"

"आपके मरे हुए पिता मेरे मरे हुए पिता के बहुत अच्छे दोस्त हुआ करते थे। धर्मदूत उनको स्वर्ग में जगह दे।"

"यह तो मुमकिन है।"

"आगे तो सुनिये जहाँपनाह। जब आपके पिता लड़ाई पर गये थे उस समय वह इतने गरीब थे कि वह एक सेना भी इकट्ठी नहीं कर सके थे।"

"यह भी मुमकिन हो सकता है।"

"यह केवल मुमकिन ही नहीं है बल्कि सच है। और पैसे की कमी की वजह से उन्होंने ये दो मिट्टी के बरतन भर कर मेरे पिता से सोने के सिक्के उधार लिये थे। उन्होंने शाही वचन दिया था कि उनका बेटा यानी कि आप उनका यह कर्ज चुका देंगे।"

शाह अली यह सुन कर ठहाका मार कर हँसा और बोला — "यह नहीं हो सकता। तुम्हारे पिता तो तुम्हारी तरह से गरीब साधु ही थे उन्होंने तो कभी सपने में भी ये दो बरतन भर कर सोने के सिक्के नहीं देखे होंगे।

पर लो ये लो तुम अपने **300** सोने के सिक्के और शैतान तुमको उठा कर ले जाये। ओ गधे तुमने तो मुझे हरा ही दिया।

7 एक पैसे में सब[41]

एक बार की बात है कि एक घाटी में एक बहुत ही अमीर सौदागर रहता था। उसके एक ही बेटा था पर वह अपने उस अकेले बेटे से कुछ परेशान सा रहता था।

असल में उसका वह बेटा बहुत ही बेवकूफ सा था और कोई अक्ल का काम करना तो दूर कुछ और भी नहीं करता धरता था।

पर उसकी मॉ उसको बहुत प्यार करती थी। वह उसके लिये अच्छा ही अच्छा सोचती थी और अगर वह कोई गलत काम भी करता था तो उसकी गलती के लिये वह कोई न कोई बहाना ढूँढ कर उसे बचा लेती थी।

धीरे धीरे वह लड़का बड़ा हो गया और अब शादी के लायक हो गया। उसकी मॉ ने अपने पति से कहा कि अब बेटा बड़ा हो गया है सो वह उसके लिये कोई अच्छी सी लड़की ढूँढ कर उसकी शादी कर दे।

पर वह सौदागर अपने बेटे की बेवकूफियों पर इतना शरमिन्दा रहता था कि उसने अपने मन में यह निश्चय कर रखा था कि वह उसकी शादी कभी नहीं करेगा।

---

[41] All For a Paisa – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : https://www.storiestogrowby.org/story/all-for-a-paisa/

उधर उसकी मॉ उसकी शादी की बहुत चिन्ता कर रही थी। वह तो बहुत दिनों से उसकी शादी का सपना देख रही थी कि कब मेरा बेटा बड़ा होगा और कब मैं उसकी शादी करूँगी।

और अब उसका बेटा सारी उम्र कुँआरा बैठा रहे यह तो वह सोच भी नहीं सकती थी और न वह इसके लिये तैयार ही थी।

सो उसने अपने बेटे की शादी के लिये बहुत कोशिशें कीं। उसने अपने पति को उसकी अक्लमन्दी के कई लक्षण बताये कई अक्लमन्दी के काम बताये ताकि उसका पति उसकी शादी कर दे पर शादी करने की बजाय वह उसकी इन बातों से चिड़चिड़ा ज़्यादा होता गया।

एक दिन जब उसकी पत्नी अपने बेटे की तारीफ किये जा रही थी तो वह चिड़चिड़ा हो कर अपनी पत्नी से बोला — "देखो तुम मुझसे यह सब कितनी बार कह चुकी हो पर तुमने इसे मुझे साबित करके कभी नहीं दिखाया।

क्योंकि मुझे तुम्हारी बातों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं है कि जो कुछ तुम कह रही हो उसमें जरा सा भी सच है। मॉऐं अन्धी होती हैं। खैर तुम्हारी सन्तुष्टि को लिये मैं उस बेवकूफ को एक मौका और देता हूँ।

तुम उसको बुलाओ और उसको यह पैसा दो और उससे कहो कि वह बाजार जाये और इस एक पैसे से कोई एक चीज़ ऐसी खरीद कर लाये जो खाने की भी हो और पीने की भी हो और

चबाने की भी हो। उसको बागीचे में भी बोया जा सके और उसको गाय को भी खिलाया जा सके।"

मॉ को यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि अब कम से कम उसके बेटे को अपने आपको साबित करने का मौका तो मिलेगा। सो तुरन्त ही उसने अपने बेटे को बुलाया उसे पैसा दिया और उसके पिता की सारी बात उसको समझा दी।

बेटे ने भी उससे पैसा लिया और बाजार चल दिया। बाजार जाते हुए रास्ते में एक नदी पड़ती थी।

जब वह नदी के पास पहुॅचा तो वह डर गया और सोचने लगा कि इस एक पैसे से वह ऐसा क्या खरीद सकता है जो खाने का भी हो और पीने का भी हो और चबाने वाला भी हो। बागीचे में बोने वाला भी हो और साथ में गाय के खाने वाला भी हो। जैसा कि उसकी मॉ ने कहा था।

यह तो बड़ा नामुमकिन सा काम है। यह सोच कर वह वहीं उदास सा खड़ा रह गया।

किस्मत से उसी समय वहॉ से एक लोहार की बेटी जा रही थी। उसने देखा कि नदी के किनारे एक लड़का उदास खड़ा है। उसने उसको वहॉ इस तरह खड़े देख कर उससे पूछा कि क्या बात है वह इतना उदास क्यों खड़ा है।

उसने उस लड़की को वह सब बताया जो उसकी मॉ ने उससे कहा था। वह लड़की बहुत होशियार थी। वह बोली — "मैं तुमको बताती हूँ कि तुम क्या खरीदो। तुम जा कर एक पैसे का तरबूज खरीद लो।"

"तरबूज?"

"हॉ तरबूज।"

वह आगे बोली देखो तरबूज तुम्हारी मॉ की सब शर्तों को पूरा करेगा। वह खाने की चीज़ भी है और वह पीने की चीज़ भी है और वह चबाने की चीज़ भी है। वह जमीन में बोने के लिये भी कुछ देगा और साथ में वह गाय के खाने के लिये भी कुछ देगा।

तुम बाजार जा कर यह खरीद कर ले जा कर अपनी मॉ को दे देना मुझे यकीन है कि वह तुम्हारी इस खरीद से बहुत खुश होंगी।

सो उसने ऐसा ही किया। जब उसकी मॉ ने अपने बेटे की अक्लमन्दी देखी तो वह तो बहुत खुश हुई। वह तुरन्त ही अपने पति के पास दौड़ी दौड़ी गयी और उस तरबूज को दिखा कर बोली देखो यह मेरे बेटे का काम है।

इत्तफाक से उनका बेटा भी वहीं अपनी मॉ के पीछे ही खड़ा था। वह तुरन्त ही अपनी मॉ के कान में फुसफुसाया "मॉ असल में उस लोहार की लड़की ने मुझे यह सलाह दी थी।"

मॉ बोली "चुप रह।"

खैर वह सौदागर अपने बेटे की अक्लमन्दी देख कर बहुत खुश हुआ कि वह उसकी पहेली का हल सोच सका।

लोहार के परिवार को शाम के खाने पर घर बुलाया गया। दोनों के माता पिता अपने बच्चों को लिये बहुत खुश थे। इस तरह उस लोहार की बेटी की शादी उस सौदागर के बेटे से हो गयी।

उसके बाद से वह लड़का एक मेहनती पति बन गया और वे दोनों खुशी खुशी रहे।

8 पहेली[42]

अनन्सी और टाकूमा कुत्ता बहुत अच्छे दोस्त थे। एक बार टाकूमा एक मुश्किल में फॅस गया। सो उसको राजा के पास ले जाया गया और वहॉ उसको फॉसी की सजा सुना दी गयी।

जब अनन्सी को इस बात का पता चला तो उसे बड़ा दुख हुआ। उसने टाकूमा से कहा — "ब्रैर[43] टाकूमा, तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। मैं तो बहुत बड़ा और बहुत ही अच्छा झूठ बोलने वाला हूॅ मैं तुमको अपनी चालाकी से बचा लूॅगा।"

सो अनन्सी टाकूमा के लिये राजा से प्रार्थना करने गया कि वह उसके दोस्त टाकूमा को छोड़ दे। राजा बोला — "अगर तुम मुझसे कोई ऐसी पहेली पूछो जिसको मैं न बूझ सकूॅ तो मैं उसको छोड़ दूॅगा।" यह सुन कर अनन्सी अपने घर चला गया।

टाकूमा के पास एक घोड़ी थी और उसके बच्चा होने वाला था। सो अनन्सी के दिमाग में कुछ आया और वह टाकूमा के पास गया और बोला — "ब्रैर टाकूमा अगर तुम वैसा ही करोगे जैसा मैं तुमसे करने के लिये कहूॅगा तो मैं तुमको बचा लूॅगा।"

---

[42] The Riddle – a folktale from Jamaica, North America. By Moses Hendricks. Taken from the Web Site : http://mythfolklore.net/3043mythfolklore/reading/jamaica/pages/18.htm [Source : the book "Jamaica Anansi Stories" by Martha Warren Beckwith, 1924. Available at http://www.sacred-texts.com/afr/jas/index.htm]

[43] "Brer" or "Brar" are the words used for "Brother".

टाकूमा गिड़गिड़ाया — "ब्रैर अनन्सी जैसा तुम कहोगे मैं बिल्कुल वैसा ही करूँगा बस तुम मुझे बचा लो।"

अनन्सी बोला — "तब तुम ऐसा करो कि तुम अपने टोप में थोड़ी सी मिट्टी भर कर उसे अपने सिर पर पहन लो। थोड़ी सी चॉदी अपने एक जूते में रखो और थोड़ा सा सोना अपने दूसरे जूते में रखो।

फिर अपनी घोड़ी के पास जाओ, उसका पेट फाड़ो और उसका बच्चा बाहर निकाल लो। और फिर घोड़ी की खाल का एक छोटा सा टुकड़ा ले कर उससे उसकी लगाम[44] बना लो।"

टाकूमा बाहर गया। उसने अपने टोप में थोड़ी सी ताजा मिट्टी भर ली और उस टोप को उसने अपने सिर पर पहन लिया।

फिर उसने थोड़ी सी चॉदी ली और उसको अपने एक जूते में रख लिया और थोड़ा सा सोना लिया जिसको उसने अपने दूसरे जूते में रख लिया। उसके बाद उसने अपनी घोड़ी के पेट से उसका बच्चा निकाल लिया।

फिर उसने अपनी घोड़ी की थोड़ी सी खाल निकाली और उसकी लगाम बना ली और वह अपनी घोड़ी के बच्चे पर चढ़ गया।

[44] Translated for the word "Briddle" – see its picture above.

अनन्सी बोला — "बस अब तुम राजा के पास जाने के लिये तैयार हो। अब तुम चलो और उससे मिलो।"

उसने टाकूमा को वह सब भी सिखा दिया कि राजा से मिलने पर उसको राजा से क्या कहना था। बाकी बात अनन्सी देख लेगा।

इस तरह से तैयार हो कर अनन्सी और टाकूमा राजा के पास चले। वहॉ जा कर अनन्सी बोला कि वह राजा के लिये एक पहेली ले कर आया है।

मैं जमीन के नीचे खड़ा हुआ था
मैं सोने और चॉदी पर चल रहा था
मैं एक ऐसी चीज़ पर सवार था जो कभी पैदा ही नहीं हुई
और उसका एक टुकड़ा मेरे हाथ में है

राजा ने बहुत सोचा बहुत सोचा पर वह इस पहेली को हल नहीं कर सका सो वह बोला — "अफसोस। मैं तो इस पहेली को हल नहीं कर सका अब तुमको ही मुझे इसे ठीक से समझाना पड़ेगा जब तक मेरी सन्तुष्टि न हो जाये।"

तब टाकूमा ने अपना टोप अपने सिर से उतारा और कहा — "देखिये मेरा टोप मिट्टी से भरा है। इसका मतलब है कि मैं जमीन के नीचे हूॅ।"

फिर उसने अपना एक जूता उतारा और उसको राजा को दिखा कर कहा "देखिये मेरे एक जूते में चॉदी है। इस तरह से मैं चॉदी पर चल रहा हूॅ।

फिर उसने अपना दूसरा जूता उतारा और उसको राजा को दिखा कर कहा "देखिये मेरे दूसरे जूते में सोना है। इस तरह से मैं सोने पर भी चल रहा हूँ।"

फिर उसने उस घोड़ी के बच्चे को राजा को दिखा कर कहा — "देखिये घोड़ी का यह बच्चा पैदा ही नहीं हुआ है क्योंकि इसको मैंने इसकी मॉ के पेट को काट कर निकाला है।"

फिर उसने अपनी लगाम राजा को दिखायी और कहा — "देखिये यह उस घोड़ी की खाल की लगाम है।"

यह सुन कर राजा ने उसकी बहुत तारीफ की और कहा — "ठीक है। जाओ ओ भले आदमी जाओ। मैंने तुमको छोड़ा।"

इस तरह अनन्सी ने अपने दोस्त टाकूमा की जान बचायी।

जैक मैन डोरा

9 चार राजकुमार जो पत्थर बन गये[45]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था जिसके चार बेटे थे। उसने उनको कह रखा था कि वे दिन रात उसके राज्य में पहरा दें और देखें कि उसके राज्य में कोई दुखी तो नहीं है किसी को किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है।

एक सुबह की बात है कि सबसे बड़े राजकुमार को पहरा देते समय एक जोगी मिल गया। वह जोगी एक तालाब के किनारे बैठा हुआ था और उसके पास चार घोड़े घास चर रहे थे। उसने देखा कि वे घोड़े जितने भी घोड़े उसके पिता के पास थे उनसे कुछ अलग ही नस्ल के थे और उनसे अच्छे भी थे।

सो वह जोगी के पास गया और उससे पूछा — "ओ जोगी तुम कौन हो और तुम यहॉ कब आये। तुम्हें यहॉ क्या चाहिये।"

जोगी बोला — "मुझे तुम चाहिये।"

राजकुमार ने आश्चर्य से पूछा — "मैं क्यों? मैं इस देश के राजा का सबसे बड़ा बेटा हूँ। मेरे पिता ने मुझे इस देश को देखने भालने के कहा है कि मैं यह देखूँ किसी को किसी चीज़ की जरूरत

---

[45] Four Princes Turned Into Stones (Tale No 27) – a folktale of Kashmir, India. Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887.
This book is available on Internet
https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false .

तो नहीं है। तो तुम यह बताओ कि तुमको किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है।"

जोगी ने फिर वही जवाब दिया — "मुझे केवल तुम चाहिये और कुछ नहीं। पर अगर तुम्हें कुछ चाहिये तो तुम मुझे बताओ मैं तुम्हारे लिये वह ला दूँगा।"

राजकुमार बोला — "ओ जोगी मैं तुम्हारे इन बढ़िया घोड़ों में से एक घोड़े पर सवारी करना चाहता हूँ।"

जोगी बोला — "ठीक है। तुम अपनी सवारी के लिये कोई सा एक घोड़ा ले लो पर ध्यान रखना कि शाम होने से पहले पहले इसे यहाँ वापस ले आना। जब तुम यहाँ आओगे तो मैं उम्मीद करता हूँ कि मैं तुम्हारी दिन भर की सवारी के बारे में तुम्हारे कुछ अनुभव जरूर सुनूँगा।"

राजकुमार ने एक घोड़ा चुना और उस पर सवार हो कर चल दिया। जैसे ही राजकुमार उस घोड़े पर चढ़ा तो उस घोड़े ने तो बहुत तेज़ी से भागना शुरू कर दिया और वह एक जंगल की तरफ जा रहा था।

वह एक सब्जी के बागीचे के पास जा कर रुक गया। उस बागीचे के चारों तरफ ऐसी बाड़ लगी थी कि उसके अन्दर कोई नहीं घुस सकता था। राजकुमार जंगल की तरफ कुछ दूर और गया और फिर वहाँ से लौटने लगा।

जब वह वापस लौट रहा था तो उसने देखा कि उस सब्जी के बागीचे के बाड़े में लगे सारे डंडे हॅसिया[46] बन गये हैं और बागीचे में से सब्जियॉ काट रहे हैं। यह देख कर उसे आश्चर्य तो बहुत हुआ पर उसकी वजह उसकी समझ में नहीं आयी कि ऐसा कैसे हुआ। वह वहॉ से चल कर जोगी के पास आ गया।

जोगी ने उससे पूछा कि उसकी घोड़े की सवारी कैसी रही। उसने रास्ते में क्या कुछ देखा। राजकुमार बोला — "मैंने एक बागीचा देखा जिसके चारों तरफ एक ऐसी बाड़ लगी हुई थी जिसमें से अन्दर जाना नामुमकिन था। मैं उससे थोड़ा और आगे चला गया। फिर जब मैं वापस लौट कर आया तो देखा कि उसी बाड़ के डंडे हॅसिया बने उस बागीचे में से सब्जी काट रहे हैं।"

जोगी ने पूछा — "जानते हो इसका क्या मतलब है?"

राजकुमार बोला — "नहीं मैं तो नहीं जानता।"

जोगी बोला — "नहीं जानते? और तुम्हारे पिता ने तुमको इस राज्य की देखभाल करने के लिये कहा है जाओ तुम पत्थर के हो जाओ।" जोगी के यह कहते ही राजकुमार पत्थर का हो गया।[47]

---

[46] Translated for the word "Sickle". See its picture above.

[47] Several of such stones can still be seen in Kashmir valley. People think them as old as Pandava's period and believe that they are petrified bodies of wicked men and women whom the good men cursed them to become stone.

अगली सुबह राजा का दूसरा बेटा शहर की देखभाल के लिये निकला। वह भी उसी जोगी के पास पहुँच गया। उसने भी जोगी के बढ़िया घोड़े देखे तो वह भी उन बढ़िया घोड़ों को देख कर बहुत खुश हो गया।

वह भी जोगी के पास रुका और उससे पूछा कि वह कौन है और वहाँ कहाँ से आया है। जोगी बोला — "मैं यहाँ इस देश में कुछ दिनों से घूम रहा हूँ। ये चारों घोड़े मेरे हैं। क्या तुम इनमें से किसी एक घोड़े की सवारी करना चाहोगे?

कल राजा का सबसे बड़ा बेटा यहाँ आया था। उसने इनमें से एक घोड़े की सवारी करनी चाही। मैंने उसको किसी भी घोड़े को चुनने और उसकी सवारी की इजाज़त दे दी। पर जब सवारी करके वह वापस आया तो जो कुछ उसने रास्ते में देखा था वह उसका मतलब मुझे समझा न सका तो मैंने उसको पत्थर का बना दिया।"

राजकुमार बोला — "अच्छा? मगर उसने ऐसा क्या देखा जिसे वह तुम्हें समझा नहीं सका?"

तब जोगी ने उसे बताया कि उसने क्या देखा था और यह वायदा किया कि अगर वह इस बात को उसे समझा सका कि वे डंडे हँसियों में क्यों बदल गये थे तो वह उसके भाई को ज़िन्दा कर देगा।

राजकुमार बोला — "जोगी तुमने तो यह बहुत ही मुश्किल सवाल पूछ लिया। जब मैंने उसे देखा ही नहीं जिसके बारे में तुम

मुझसे पूछ रहे हो तो मैं उसे तुम्हें कैसे समझा सकता हूँ। हाँ अगर मैं तुम्हारा एक सुन्दर घोड़ा ले जाऊँ और उसे देख आऊँ तो शायद मैं तुम्हें समझा सकूँ।"

जोगी ने उसको इजाज़त दे दी और वह एक घोड़ा ले कर वहाँ से चला गया। वह घोड़ा भी उसको एक जंगल की तरफ ले गया। वहाँ जा कर उसने देखा कि नयी पैदा हुई बछिया अपनी माँ को दूध पिला रही है। वह बहुत देर तक इस अजीब दृश्य को देखता रहा और फिर जोगी के पास लौट आया।

जोगी ने पूछा — "तुमने रास्ते में क्या देखा?"

राजकुमार ने उसे बताया कि उसने देखा कि नयी पैदा हुई बछिया अपनी माँ को दूध पिला रही थी। जोगी ने उससे भी पूछा — "क्या तुम बता सकते हो कि इसका क्या मतलब हुआ?"

राजकुमार बोला — "मैं नहीं जानता।"

जोगी बोला — "क्या? तुम नहीं जानते?"

राजकुमार उसके इस सवाल का जवाब नहीं दे पाया क्योंकि इससे पहले ही वह पत्थर का बन चुका था।

तीसरी सुबह तीसरा राजकुमार शहर की देखभाल के लिये निकला और वह भी जोगी के पास आया। उसने भी उसके घोड़े देखे। वह भी उसके घोड़े देख कर आश्चर्यचकित रह गया। उसने उससे पूछा कि वह कौन था और उसको इतने सुन्दर घोड़े कहाँ से मिले।

उसके इन सवालों पर ध्यान न देते हुए जोगी ने उससे उसके पास बैठ जाने के लिये कहा। बातों बातों में उसने पता चला लिया कि यह भी राजकुमार था और अपने दो बड़े भाइयों की खोज में निकला था। उसने उसको बता दिया कि उसके दोनों बड़े भाइयों के साथ क्या हुआ।

फिर उसने बाद में उससे यह भी कहा कि वह उसके दोनों भाइयों को ज़िन्दा कर देगा अगर वह यह बता दे कि बाड़े के डंडे हॅसियों में क्यों बदल गये थे और नयी पैदा हुई बछिया अपनी मॉ को दूध क्यों पिला रही थी।

राजकुमार बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। अगर आप मुझे अपना एक घोड़ा दे दें तो मैं इन अजीब चीज़ों को देख सकता हूॅ और तब शायद आपको समझा सकूॅ।"

जोगी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुम इनमें से कोई सा घोड़ा ले लो मगर ध्यान रखना कि शाम होने से पहले ही यहॉ वापस आ जाना।"

राजकुमार ने उन घोड़ों में से एक घोड़ा लिया और उस पर सवार हो कर चल दिया। वह घोड़ा भी उसको जंगल की तरफ ले गया जहॉ उसने देखा कि एक आदमी अपनी पीठ पर लकड़ियॉ लादे लिये जा रहा है। वह केवल उन्हीं लकड़ियों से सन्तुष्ट नहीं है जो उसने इकट्ठी कर ली हैं बल्कि वह रास्ते में पड़ी और भी लकड़ियॉ उठाता जा रहा है।

राजकुमार ने सोचा इसका क्या मतलब हो सकता है। जब मैं जोगी के पास पहुँचूँगा तो मैं जोगी को इसका क्या मतलब बताऊँगा। अफसोस यह राजकुमार भी इस दृष्य का मतलब समझाने में नाकामयाब रहा और जोगी ने इसको भी पत्थर में बदल दिया।

अगली सुबह राजा का चौथा और आखिरी बेटा शहर की देखभाल के लिये और अपने भाइयों को ढूँढने के लिये निकला तो वह भी जोगी के पास आ निकला।

उसने जोगी को प्रणाम किया और उससे पूछा कि क्या उसने उसके तीनों भाइयों को देखा है। जोगी बोला — "हाँ देखा है।"

कह कर उसने एक तरफ इशारा करते हुए उससे कहा कि देखो तुम्हारे तीनों भाई ये खड़े हैं। मैंने ही उनको पत्थरों में बदल दिया है क्योंकि उन्होंने पास के जंगल में जो कुछ देखा था वे उनको मुझे समझा नहीं सके। पर मैं उनको ज़िन्दा कर सकता हूँ अगर तुम मुझे उन सबका मतलब समझा दो तो।"

इसके बाद उसने उन राजकुमारों द्वारा देखे हुए तीनों दृष्य उसको बता दिये। राजकुमार बोला — "अगर आप मुझे अपना एक घोड़ा सवारी के लिये दे दें तो शायद मैं उनका मतलब बता सकूँ। मैं खुद उस जंगल में जा कर उनको देखना चाहता हूँ।"

जोगी ने उसको इजाज़त दे दी और राजकुमार उन घोड़ों में से एक घोड़ा ले कर जंगल की तरफ चल दिया।

जब वह जंगल में पहुँचा तो वहाँ उसने एक तालाब देखा जिसमें से पानी बह बह कर निकल कर दूसरे तालाबों को भर रहा था। उस समय वह बड़ा वाला तालाब खाली था क्योंकि उसका सारा पानी उन छोटे तालाबों को भरने में लग चुका था।

शाम को जब वह जोगी के पास लौटा तो जोगी ने उससे भी वही सवाल किया जो उसने उसके तीनों बड़े भाइयों सो किया था कि उसने रास्ते में क्या देखा और उसका क्या मतलब था। यह राजकुमार भी जोगी के इस सवाल का जवाब देने में नाकामयाब रहा। सो जोगी ने इसको भी पत्थर में बदल दिया।

जब राजा को पता चला कि कई दिनों से उसके चारों बेटों में से किसी का भी कोई पता नहीं है तो उसको शक हुआ कि उसके बेटों पर जरूर ही कोई मुसीबत आ पड़ी है। अब वह खुद उनको ढूँढने के लिये निकल पड़ा।

ढूँढते ढूँढते वह भी जोगी के पास आया। उसने भी जोगी से पूछा — "जोगी जी क्या आपने मेरे चारों बेटों को कहीं देखा है?"

जोगी ने एक तरफ खड़े चार पत्थर के खम्भों की तरफ इशारा कर दिया। राजा यह देख कर सकते में आ गया। उसके मुँह से निकला — "कहीं आपका यह मतलब तो नहीं कि वे पत्थर में बदल गये हैं।"

जोगी बोला — "हाँ ये ही हैं वे। मैंने ही उनको पत्थरों में बदल दिया है क्योंकि वे मुझे जंगल में देखे हुए कुछ दृश्यों के मतलब नहीं

समझा सके। फिर भी मैं उनको ज़िन्दा कर सकता हूँ अगर तुम उनका मतलब मुझे समझा दो तो। अगर तुम्हें चाहिये तो तुम मेरा एक घोड़ा ले कर जंगल जा सकते हो।"

राजा बोला — "नहीं धन्यवाद। इसकी कोई जरूरत नहीं है। पर अगर आप मुझे यह बता सकें कि उन्होंने क्या देखा जिसको वे आपको नहीं समझा सके तो शायद मैं उनको आपको समझाने की कोशिश कर सकूँ।"

तब जोगी बोला — "राजन तुम्हारे सबसे बड़े बेटे ने जंगल में एक सब्जी का बागीचा देखा जिसके चारों तरफ ऐसी बाड़ लगी थी जिसको पार कर उसके अन्दर जाना नामुमकिन था। पर जब वह वहाँ से लौटा तो उसने देखा कि उस बाड़ के डंडे हँसिये बन कर उस बागीचे की सब्जी काट रहे हैं। इसका क्या मतलब है।"

राजा बोला — "यह एक ऐसे आदमी की तस्वीर है जिसके पास कुछ पैसा सुरक्षा के लिये रखा गया हो और जब उस पैसे का मालिक अपना पैसा उससे वापस माँगने आया हो तो उस आदमी ने उसके पैसे को या तो कहीं छिपा दिया हो या फिर उसे खर्च कर दिया हो जिससे कि उस पैसे के मालिक को उसका पैसा न मिल पा रहा हो।"

जैसे ही राजा ने अपना वाक्य पूरा किया कि उसका बड़ा बेटा उसके सामने ज़िन्दा और तन्दुरुस्त खड़ा हो गया। जोगी ने अपना दूसरा सवाल किया — "तुम्हारे दूसरे बेटे ने एक नयी पैदा हुई

बछिया को अपनी मॉ को दूध पिलाते देखा। इसका क्या मतलब है।"

राजा बोला — "बड़ी अजीब सी बात है कि उसको यह देख कर किसी एक ऐसी स्त्री की याद नहीं आयी जो अपनी बेटी की कमाई पर ज़िन्दा रहती हो।"

राजा के यह कहते ही उसका दूसरा बेटा भी ज़िन्दा हो कर उसके सामने आ खड़ा हुआ। तब जोगी ने अपना तीसरा सवाल पूछा — "राजन तुम्हारे तीसरे बेटे ने एक ऐसा आदमी देखा जो अपनी पीठ पर लकड़ियॉ लादे लिये जा रहा था। वह अपने उस ढेर से सन्तुष्ट नहीं था और रास्ते में उसको और जो लकड़ियॉ मिलती जा रही थीं वह उनको भी उठाता जा रहा था। इसका क्या मतलब है।"

राजा बोला — "यह इस बात को बताता है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो उनके पास जो कुछ भी होता है वे उससे सन्तुष्ट नहीं होते उनको हमेशा ही और ज़्यादा की इच्छा बनी रहती है।"

जैसे ही राजा ने ये शब्द बोले कि उसका तीसरा बेटा भी ज़िन्दा हो कर उसके सामने आ खड़ा हुआ। अब जोगी ने अपना चौथा और आखिरी सवाल पूछा — "राजन तुम्हारे सबसे छोटे बेटे ने जंगल में एक तालाब देखा जिसने छह दूसरे तालाबों को पानी देने के लिये अपने आपको खाली कर दिया। इसका क्या मतलब है।"

राजा बोला — "जोगी जी वह तालाब दुनियॉ के उन आदमियों के समान है जो दूसरों को देने के लिये अपना सब कुछ खर्च कर देते हैं पर बदले में उन्हें क्या मिलता है। कुछ भी नहीं।"

जैसे ही राजा यह बोला उसका चौथा बेटा भी ज़िन्दा हो कर उसके सामने आ खड़ा हुआ। राजा और उसके चारों बेटे खुशी खुशी अपने महल वापस लौट आये। कुछ समय बाद ही राजा ने अपनी गद्दी छोड़ कर अपना राज्य अपने बच्चों को दे दिया और वह खुद जंगल में शान्ति से रहने चला गया।

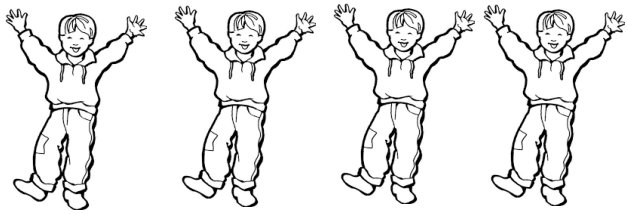

10 मछली हॅसी क्यों[48]

एक बार की बात है कि एक मछियारिन अपनी मछलियॉ ले कर राजा के महल के पास से गुजर रही थी कि रानी ने अपने महल की एक खिड़की से बाहर झॉका और उसको अपने पास बुलाया और उसके पास जो कुछ था वह उसे दिखाने के लिये कहा।

उसी पल एक बहुत बड़ी मछली उसकी टोकरी की तली में से बाहर कूद गयी। रानी ने पूछा कि यह नर मछली है या मादा मछली। मुझे तो मादा मछली चाहिये।

यह सुन कर मछली बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी। मछियारिन बोली "यह तो नर मछली है।" और उसे बेचने के लिये महल का चक्कर काटने चल दी।

रानी गुस्सा हो कर अपने कमरे में लौट आयी। जब राजा शाम को अपनी रानी से मिलने आया तो उसने देखा कि उसकी रानी कुछ परेशान है। राजा ने पूछा — "क्या तुम परेशान हो।"

रानी बोली — "नहीं पर मैं एक मछली के व्यवहार से कुछ नाराज हूॅ। आज एक स्त्री एक मछली ले कर मेरे पास आयी थी

[48] Why the Fish Laughed (Tale No 63) – a folktale of Kashmir, India. Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887.
This book is available on Internet
https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false .

और जब मैंने उससे पूछा कि यह मछली नर है या मादा तो वह मछली बड़े बुरे तरीके से हॅस पड़ी।"

राजा हॅस कर बोला — "तुमने क्या कहा कि मछली हॅस पड़ी? यह तो नामुमकिन है। तुमने जरूर कोई सपना देखा होगा।"

रानी बोली — "मैं कोई बेवकूफ नहीं हूॅ। मैं वही बोल रही हूॅ जो मैंने अपनी ऑखों से देखा और अपने कानों से सुना।"

राजा बोला — "बड़ी अजीब सी बात है। चलो ऐसा ही सही कि मछली हॅसी। मैं मालूम करूॅगा कि क्या मामला था।"

अगले दिन राजा ने अपने वजीर को बुला कर उससे वही कहा जो रानी ने उससे कहा था और उससे इस मामले की जॉच करने के लिये कहा कि मछली क्यों हॅसी। और कहा कि अगर छह महीनों के अन्दर अन्दर उसने इस बात का जवाब ला कर नहीं दिया तो वह उसको मार देगा।

वजीर ने राजा से वायदा किया कि वह अपनी पूरी कोशिश करेगा हालॉकि उसको लग रहा था कि वह यह बात कभी मालूम नहीं कर पायेगा और उसकी मौत अब उसके सामने खड़ी थी।

पूरे पॉच महीने तक वह मछली के हॅसने की वजह ढूॅढता ढूॅढता थक गया। उसने हर जगह ढूॅढा हर किसी से पूछा – अक्लमन्द से और विद्वान से जादू जानने वालों से और बहुत तरीके की चालें खेलने वालों से। कोई भी तो उसको मछली के हॅसने की वजह नहीं बता सका। सो वह टूटा दिल ले कर अपने घर लौट आया।

अब उसने अपनी मौत की तैयारी करनी शुरू कर दी थी क्योंकि उसको राजा के बारे में बहुत अच्छा अनुभव था कि वह अपनी धमकी से वापस नहीं फिरेंगे। और दूसरी तैयारियों के साथ साथ उसने अपने बेटे को भी तब तक घूमने फिरने भेज दिया था जब तक राजा का गुस्सा थोड़ा कम होता है।

वजीर का नौजवान बेटा सुन्दर भी था और अक्लमन्द भी। वह अपने घर से चल दिया जहॉ भी उसको उसकी किस्मत ले जाये। उसको गये हुए कुछ ही दिन हुए थे कि उसको एक बूढ़ा किसान मिल गया जो किसी गॉव को जा रहा था।

उसको वह बूढ़ा अच्छा लगा तो उसने यह बताते हुए कि वह भी उसी जगह जा रहा था उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ जा सकता था। बूढ़ा राजी हो गया और वे दोनों एक साथ चलने लगे। दिन गरम था और रास्ता लम्बा और थका देने वाला।

नौजवान बोला — "क्या वह आसान नहीं होता अगर हम एक दूसरे को बारी बारी से उठा कर ले चलते?"

बूढ़े ने सोचा यह नौजवान कितना बेवकूफ है। हम लोग एक दूसरे को उठा कर कैसे ले जा सकते हैं। सो उसने उसकी बात को टाल दिया।

इस समय वे लोग मक्का के एक खेत से हो कर गुजर रहे थे जो कटने के लिये तैयार खड़ा था। जब वह हवा से हिलता था तो ऐसा लगता था जैसे सोने का समुद्र हो।

नौजवान ने पूछा — "यह खा लिया गया है या नहीं।"

बूढ़े की यह बात बिल्कुल समझ में नहीं आयी तो वह बोला "पता नहीं।"

कुछ देर बाद ये दोनों यात्री एक बड़े से गॉव में आ गये जहॉ आ कर नौजवान ने अपने बूढ़े साथी को एक चाकू दिया और कहा — "दोस्त यह लो और इससे दो घोड़े खरीद लो। पर ध्यान रहे कि तुम इसे वापस ले आना क्योंकि यह बहुत कीमती है।"

बूढ़े को उसकी यह बात सुन कर हॅसी भी आयी और गुस्सा भी आया। उसने उसका चाकू कुछ ऐसे बड़बड़ाते हुए उसी को वापस कर दिया जैसे कि उसका दोस्त या तो कुछ पागल था या फिर बेवकूफ था।

नौजवान ने उसके जवाब की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और जब तक चुप ही रहा जब तक वे लोग शहर नहीं पहुॅच गये। शहर के कुछ दूर बाहर ही उस बूढ़े किसान का घर था। वे बाजार से हो कर मस्जिद गये पर किसी ने भी उनको अन्दर आने और सुस्ताने के लिये नहीं कहा।

नौजवान के मुॅह से निकला — "अरे यह तो एक बहुत बड़ी कब्रगाह लगती है।"

बूढ़े किसान ने सोचा पता नहीं इस नौजवान के यह कहने का क्या मतलब है जो इतने बड़े शहर को यह कब्रगाह कह रहा है। यहॉ से आगे चलने के बाद वे एक कब्रगाह से गुजरे जहॉ कुछ लोग

कब्रों पर प्रार्थना कर रहे थे और अपने मरे हुए प्यारों के नाम पर आने जाने वालों को रोटी और कुलचे बॉट रहे थे। उन्होंने इन दोनों यात्रियों को भी अपने पास बुलाया और इनको भी खाने के लिये दिया जितना भी इनको चाहिये था।

नौजवान बोला — "ओह कितना सुन्दर शहर है।"

यह सुन कर तो बूढ़े को यकीन हो गया कि यह नौजवान बिल्कुल ही पागल है। पता नहीं आगे यह क्या कहेगा – पानी को जमीन और जमीन को पानी। और जब रोशनी होगी तो यह अँधेरे की बात करेगा और जब अँधेरा होगा तब उसे रोशनी कहेगा। पर उसने अपने ये विचार अपने तक ही रखे।

चलते चलते वे एक नदी से हो कर गुजरे जो कब्रगाह के बराबर से गुजरती थी। पानी थोड़ा गहरा था सो बूढ़े किसान ने अपने जूते उतार दिये और अपना पाजामा ऊपर चढ़ा लिया पर नौजवान ने वह नदी जूते और पाजामा पहने ही पार की।

यह देख कर बूढ़े ने अपने मन में कहा "मैंने आज तक ऐसा बेवकूफ नहीं देखा जो ऐसी बेवकूफी की बातें करता है और ऐसी बेवकूफी के काम करता है।"

फिर भी उसको यह आदमी अच्छा लगा। उसने सोचा कि यह आदमी उसकी पत्नी और बेटी को हॅसायेगा सो उसने उसको अपने घर बुलाया और उसको तब तक रहने के लिये कहा जब तक वह उस गॉव में रहे।

नौजवान बोला — "आपका बहुत बहुत धन्यवाद पर अगर आपको बुरा न लगे तो पहले मैं आपसे एक बात पूछ लूँ। क्या आपकी छत की शहतीर[49] काफी मजबूत है।"

बूढ़े किसान ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और हँसते हुए अपने घर में घुसा। घर वालों के आदाब का जवाब देते हुए वह बोला — "बाहर एक आदमी खड़ा है। वह मेरे साथ बहुत दूर से आ रहा है। मैं उसको तब तक यहाँ ठहराने के लिये ले आया हूँ जब तक वह इस गाँव में रहता है क्योंकि उसको इसी गाँव में ठहरना है।

पर यह आदमी इतना बेवकूफ है कि मैं तो इसकी एक भी बात का कोई मतलब नहीं निकाल सका। अभी यह यह जानना चाहता है कि मेरे घर की शहतीर मजबूत है कि नहीं। अरे उसको इस बात से क्या मतलब कि मेरे घर की शहतीर मजबूत है या नहीं। मुझे तो यह आदमी कुछ पागल सा लगता है।"

और यह कह कर वह अपने आप ही बड़े ज़ोर से हँस पड़ा। किसान की बेटी बहुत अक्लमन्द थी बोली — "पिता जी जो भी यह आदमी है वह बेवकूफ नहीं है जैसा कि आप सोचते हैं। वह केवल

[49] Big wooden logs on which the roof of the house is rested – see their picture above.

यह जानना चाहता है कि आप उसको अपने घर में रखने का खर्चा उठा सकते हैं या नहीं।"

किसान बोला — "क्यों नहीं क्यों नहीं। अब मैं समझा। तो शायद तुम मेरी दूसरी पहेलियों को भी सुलझाने में मेरी सहायता कर सको। जब हम साथ साथ आ रहे थे तो इसने मुझसे कहा "या तो मैं उसको ले चलूँ या वह मुझे ले चले" क्योंकि उसको लगा कि उस तरीके से शायद हम लोग ज़्यादा खुश खुश आयेंगे।

लड़की बोली — "यकीनन पिता जी। इससे उसका मतलब था कि या तो वह आपको कहानी सुनाता जाये या फिर आप उसको कहानी सुनाते जायें इससे रास्ता आसानी से कट जायेगा।"

किसान बोला — "अच्छा। जब हम मक्का के खेत में से गुजर रहे थे तो इसने मुझसे पूछा "क्या यह खेत खाया हुआ है।" इसका क्या मतलब हुआ।"

लड़की बोली — "और इसका मतलब आपको पता नहीं था? वह केवल यह जानना चाहता था कि जिस आदमी का यह खेत था उसके ऊपर कोई कर्जा था या नहीं। क्योंकि अगर खेत के मालिक के ऊपर कोई कर्जा था तो उस खेत की पैदावार उसके लिये वैसी ही थी जैसी कि खायी हुई होती थी क्योंकि वह पैदावार तो उसका कर्जा निबटाने में ही चली जायेगी।"

किसान फिर बोला — "ओह हॉ। यह तो ठीक है। फिर हम लोग एक गॉव में घुसे तो इसने मुझे एक चाकू दे कर कहा कि मैं

उससे दो घोड़े खरीद लूँ और वह चाकू वापस ला कर उसको दे दूँ क्योंकि इसका वह चाकू बड़ा कीमती है।"

लड़की बोली — "क्या दो मोटे मोटे डंडे दो घोड़ों के बराबर नहीं हैं पिता जी जो किसी यात्री को सड़क पर चलने में सहायता कर सकें। इस बात से उसका मतलब यह था कि आप दो मोटे मोटे डंडे काट कर ले आयें और उसका चाकू भी वापस ले आयें।"

किसान बोला — "ओह अब मैं समझा। फिर हम लोग एक शहर से गुजर रहे थे तो वहाँ हमको कोई दिखायी नहीं दिया जिसको हम जानते और किसी ने भी हमको कुछ खाने को भी नहीं दिया। फिर हम एक कब्रगाह के पास से गुजरे तो वहाँ कुछ लोगों ने हमें अपने पास बुलाया और रोटी और कुलचा खाने के लिये दिया। इसलिये मेरे साथी ने शहर को कब्रगाह और कब्रगाह को शहर कहा।"

लड़की बोली — "यह बात भी बिकुल्ल साफ है पिता जी। अगर कोई यह सोचता है कि शहर में सब कुछ मिल जायेगा पर वहाँ ऐसे लोग बसते हैं जो मेहमाननवाजी जानते ही नहीं तो वहाँ के लोग तो मरे लोगों से भी बदतर हुए न। शहर जो लोगों से भरा हुआ था ऐसा था वह आपके लिये ऐसा था जैसे उसमें सब मरे हुए लोग रहते हों।

और वह कब्रगाह जहॉ कोई यह सोचता है कि वहॉ तो कोई ज़िन्दा आदमी उसकी मेहमाननवाजी करने के लिये होगा ही नहीं वहॉ उसको भर पेट खाना मिल जाता है तो वह शहर जैसा हो गया।"

किसान ने आश्चर्य प्रगट करते हुए कहा — "तुमने ठीक कहा बेटी। फिर चलते चलते हम एक नदी से गुजरे तो इसने बिना जूते और पाजामा उतारे ही उसे पार कर लिया।"

लड़की बोली — "पिता जी मुझे उसकी अक्लमन्दी अच्छी लगी। मैंने अक्सर सोचा है कि वे लोग कितने बेवकूफ हैं जो इतनी तेज़ बहती नदी को जिसमे नुकीले पत्थर पड़े रहते हैं जूते उतार कर पार करते हैं।

अगर उनका पैर ज़रा सा भी इधर उधर पड़ जाये और वे गिर जायें तो वे तो सिर से ले कर पैर तक भीग जायेंगे। आपका यह दोस्त तो बहुत ही अक्लमन्द है। पिता जी मैं इस आदमी से मिलना चाहती हॅू और इससे बात करना चाहती हॅू।"

किसान बोला — "ठीक है। मैं उसको ढूँढता हॅू और बुला कर लाता हॅू।"

लड़की बोली — "आप उनसे कहियेगा पिता जी कि हमारे मकान की शहतीरें बहुत मजबूत हैं तो वह आपके साथ आ जायेंगे। मैं उनके लिये आपके हाथों एक भेंट भी भेजूँगी ताकि वह समझ जायें कि हम उनकी मेहमाननवाजी कर सकते हैं।"

सो उसने एक नौकर को बुलाया और उसको एक बरतन भर कर ग्यव[50] दिया, बारह रोटियॉ दीं और एक बोतल दूध दे कर उसको उस आदमी के पास यह सन्देश दे कर भेजा "ओ दोस्त चॉद पूरा है। बारह महीनों का एक साल होता है और समुद्र में से पानी बह बह कर बाहर निकल रहा है।"

वह नौकर जब इस भेंट और सन्देश को ले कर चला तो आधे रास्ते में ही उसको अपना छोटा बेटा मिल गया। बेटे ने देखा कि उसके पिता जी के पास टोकरी में खाना था तो उसने उससे कुछ खाना मॉगा। उसका पिता थोड़ा बेवकूफ था सो उसने उसको कुछ खाना दे दिया।

उसी समय उसने उस नौजवान को देखा जिसके लिये वह वह खाना और सन्देश ले कर जा रहा था। उसने बचा हुआ खाना और सन्देश उस नौजवान को दे दिया।

नौजवान ने कहा — "अपनी मालकिन को मेरा सलाम कहना और उनसे कहना कि चॉद नया है[51] मुझे साल में केवल ग्यारह महीने ही मिले और समुद्र भी पूरा नहीं है।"

नौकर इन शब्दों का मतलब तो नहीं समझा पर उसने घर जा कर उसका सन्देश लड़की को ऐसा का ऐसा ही दे दिया। इस तरह उसकी चोरी पकड़ी गयी और उसको उसकी सजा भुगतनी पड़ी।

[50] "Gyav" means melted butter or "Ghee".

[51] Translated for the words "Moon is new" – means New Moon or Amaavasyaa

कुछ देर बाद ही वह नौजवान किसान के साथ घर आया तो उसका ज़ोर शोर से स्वागत किया गया और उसका इस तरह से स्वागत किया जैसे वह कोई बड़े बाप का बेटा है हालॉकि उसके मेजबान को उसके बारे में कुछ पता नहीं था।

काफी देर बात करने के बाद उसने उनको अपनी कहानी सुनायी – मछली के हॅसने के बारे में उसके पिता की मौत की सजा के बारे में और फिर अपने घर से निकाले जाने के बारे में। फिर उसने उनसे इस बारे में उनकी सलाह मॉगी।

लड़की बोली — "ऐसा लगता है कि मछली की हॅसी ही इस सब मुसीबत की जड़ है। और मछली इसलिये हॅसी लगती है कि राजा के महल में कोई एक ऐसा आदमी है जिसका राजा को पता नहीं है।"

नौजवान बोला — "बहुत अच्छे बहुत अच्छे। अभी मेरे लौट जाने में कुछ समय बाकी है जिससे मैं अपने पिता को उनकी अन्यायपूर्ण मौत से बचा सकॅूगा।"

अगले ही दिन वह किसान की बेटी को अपने साथ ले कर वापस अपने घर की तरफ लौट पड़ा।

अपने घर पहुॅचते ही वह महल की तरफ दौड़ गया और जा कर उसे जो कुछ मछली के हॅसने का मतलब पता चला था बताया। बेचारा वजीर तो मौत के डर से अभी से मरा हुआ हो रहा था।

उसको तुरन्त ही राजा के पास ले जाया गया। उसने राजा को वही बता दिया जो उसके बेटे ने उसे बताया था।

राजा बोला — "नहीं कभी नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

वजीर बोला — "पर ऐसा ही होना चाहिये राजा साहब। जो कुछ भी मैंने सुना है उसकी सच्चाई को साबित करने के लिये मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप पहले तो एक गड्ढा खोदें फिर अपनी सारी दासियों को अपने महल में बुलायें और उन सबको उस गड्ढे के ऊपर से कूदने के लिये कहें। ऐसा करने से आदमी का पता चल जायेगा।"

यह सुन कर राजा ने एक गड्ढा खुदवाया और अपनी सब दासियों को उसके ऊपर से कूद जाने के लिये कहा। सब दासियों ने कोशिश की पर केवल एक ही वह गड्ढा पार कर सकी। वह कोई दासी नहीं बल्कि एक आदमी था।

इस तरह रानी सन्तुष्ट हुई और वजीर अपनी मौत से बच सका। उसके कुछ दिन बाद वजीर के बेटे की शादी किसान की बेटी से हो गयी जो आगे चल कर बहुत सफल रही।

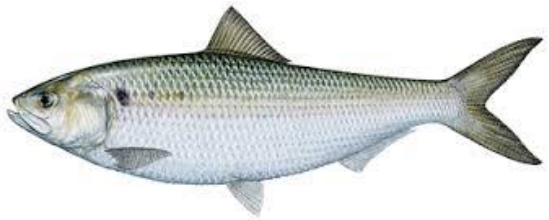

11 एक विद्यार्थी की कहानी[52]

बहुत पुरानी बात है कि किसी गॉव में एक स्कूल था। एक बार वहॉ के मास्टर जी ने बच्चों को कहा कि स्कूल में सब बच्चों को साफ कपड़े पहन कर आने हैं। पर बच्चों ने कहा कि वे साफ कपड़े नहीं पहन सकते थे क्योंकि उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वे साफ कपड़े पहन सकते।

मास्टर जी बोले कि अगर तुम्हारे पास इतने पैसे नहीं हैं तो जाओ अपने अपने पिताओं को बेच दो और उनको बेच कर जो पैसे आयें उनसे नये कपड़े खरीद लो।

अब बच्चों के पास और कोई चारा नहीं था सो उन सबने अपने अपने पिताओं को बेच दिया और नये कपड़े खरीद लिये।

कुछ दिन बाद एक बार मास्टर जी ने फिर बच्चों को इकट्ठा किया और बोले — "मेरे प्यारे बच्चों, तुम लोग अभी तक सब कुछ बहुत अच्छा करते रहे हो।

अब तुम लोगों को स्कूल के लिये एक काम और करना है वह यह कि घर जा कर तुम अपनी अपनी माताओं को बेच दो और उनके बेचने से जो पैसे मिलें उनसे बढ़िया घोड़े खरीद लो। अगर कोई भी विद्यार्थी इस काम को करने में पीछे रहेगा या हिचकिचायेगा तो उसे स्कूल से निकाल दिया जायेगा।"

[52] A Story of a Student – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, Eastern Africa

बेचारे विद्यार्थी अपने अपने घर गये और उन्होंने अपनी अपनी माताओं को बेच कर घोड़े खरीद लिये।

अगले दिन सभी विद्यार्थी अपने अपने घोड़ों पर चढ़ कर स्कूल आये। उनमें से एक विद्यार्थी ने बहुत ही बढ़िया सफेद घोड़ा खरीदा था।

सभी विद्यार्थियों को उनके इस काम के लिये शाबाशी दी गयी परन्तु सफेद घोड़े वाले लड़के को खास शाबाशी मिली। और इस खास शाबाशी के बदले में उसकी स्कूल से छुट्टी कर दी गयी कि अब उसको और पढ़ाई करने की जरूरत नहीं थी।

अब इस लड़के ने अपना घोड़ा उठाया और विदेश की यात्रा पर निकल पड़ा। काफी देर चलने के बाद उसे भूख लग आयी।

रास्ते में उसे एक हिरन मिल गया सो उसने उस हिरन को मार कर उसका मॉस खा लिया। पर खाने के बाद उसे प्यास भी लगी पर पानी उसे कहीं दिखायी नहीं दिया। प्यास से उसका गला सूखा जा रहा था।

इतने में उसने देखा कि उसके घोड़े की गरदन से पसीना टपक रहा है। उसने घोड़े के पसीने को एक प्याले में इकट्ठा किया और अपनी प्यास बुझायी। वह फिर अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

रात गुजारने के लिये वह एक गॉव में रुका। एक झोंपड़ी में एक बुढ़िया रहती थी उसी बुढ़िया की झोंपड़ी में उसने रात गुजारने का निश्चय किया। खाना खा कर वे दोनों बातें करने लगे।

बातों बातों में लड़के ने पूछा — "मॉ जी, क्या बात है यहॉ गॉव में कोई जवान लड़के नहीं दिखायी देते?"

बुढ़िया बोली — "क्या बताऊॅ बेटा, इस गॉव में तो बहुत सारे जवान लड़के थे पर अब सब मरते जा रहे हैं।"

लड़का बोला — "कैसे मॉ जी?"

बुढ़िया बोली — "इस गॉव में एक बहुत ही सुन्दर लड़की रहती है। उसने अपनी शादी के लिये एक शर्त रखी है कि जो कोई भी उससे शादी करना चाहता है वह उस लड़की से कोई पहेली पूछेगा।

अगर उस लड़की ने उसकी पहेली नहीं बूझी तब तो वह उससे शादी कर लेगी और अगर उसने उस लड़के की पहेली बूझ ली तो उस लड़के को मार दिया जायेगा।

बेटा, वह लड़की सुन्दर होने के साथ साथ होशियार भी बहुत है। अब तक निन्यानवे लड़के उसके पास अपनी पहेलियॉ ले कर पहुॅच चुके हैं पर उसने उन सभी की पहेलियॉ बूझ दीं हैं। और वे सभी लड़के मारे जा चुके हैं। इसी लिये तुमको इस गॉव में जवान लड़के कम दिखायी देते हैं।"

यह कहानी सुन कर उस लड़के का मन हुआ कि वह भी उस लड़की को देखे जिस पर इतने लड़के कुर्बान हो चुके हैं।

वह बुढ़िया से बोला कि वह भी इन निन्यानवे लड़कों की गिनती में अपना नाम लिखवाना चाहता है जिससे कि उस पर मरने वालों की गिनती पूरी सौ हो जाये।

अगले दिन वह उस लड़की के पास गया और अपनी पहेली उसके सामने रखी — "कल मैं यात्रा में था। मैंने एक पवित्र चीज़ खायी और एक अपवित्र चीज़ पी। वे क्या चीज़ें हो सकती हैं?"

लड़की बोली — "तुम्हारा सवाल सुन्दर है, कल सुबह आ कर इसका जवाब ले जाना।"

शाम को उस लड़की ने एक लड़के का वेश बनाया और उस बुढ़िया के घर जा पहुँची जिसके घर में वह लड़का ठहरा हुआ था। दोनों ने उस लड़की का बहुत आदर किया और तीनों बहुत देर तक बातें करते रहे।

जब लड़के ने उसको बताया कि वह भी अपनी पहेली ले कर उस लड़की के पास गया था तो लड़की ने उस पहेली की बड़ी तारीफ की और दुआ की कि इस बार उसको जरूर जीत जाना चाहिये।

फिर उस लड़के की पहले दिन की यात्रा के बारे में बात हुई। बातों ही बातों में उस लड़की ने पता चला लिया कि कल उस लड़के ने हिरन का मॉस खाया था और अपने घोड़े का पसीना पिया था।

इतनी सब बातें करते करते लड़के की नजर उस लड़की के सिर पर पड़ी तो उसको लगा कि उसके सिर पर बँधे कपड़े के नीचे तो बहुत सारे बाल हैं। उसको कुछ शक हो गया कि वह लड़का न हो कर कोई लड़की थी सो उसने चुपचाप उस लड़की के कुछ बाल काट लिये।

अगले दिन वह अपनी पहेली का जवाब लेने के लिये उस लड़की के घर गया। वह अब उस लड़की को तुरन्त ही पहचान गया कि कल यही लड़की लड़के के वेश में उसके घर आयी थी पर वह चुप रहा। पर उसको यह भी विश्वास था कि उसकी पहेली का जवाब देना आसान नहीं था।

जब वह उस लड़की के घर पहुँचा तो उस लड़की ने उसको तुरन्त ही उसकी पहेली का जवाब दे दिया कि उसने यात्रा में हिरन का मॉस खाया था और घोड़े का पसीना पिया था। क्योंकि जवाब ठीक था इसलिये उस लड़के को मारने का हुकुम दे दिया गया।

जब वह लड़की जाने लगी तो वह लड़का बोला — "सभी मरने वालों से उनकी आखिरी इच्छा पूछी जाती है। क्या तुम मुझसे मेरी आखिरी इच्छा नहीं पूछोगी?"

लड़की मुस्कुरायी और बोली — "क्यों नहीं। बोलो नौजवान, तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है?"

लड़का बोला — "कल रात मेरे घर एक बहुत ही खूबसूरत चिड़िया आयी थी। किसी तरह मैंने उसके पंखों में से एक पंख

निकाल लिया। मैं वह पंख उसको भेंट करना चाहता हूँ और एक बार उसके हाथों को अपने हाथों में ले कर चूमना चाहता हूँ।"

इतना कह कर उसने अपनी जेब से उस लड़की के कटे बाल निकाले और आगे बढ़ा दिये। लड़की ने जब बाल देखे तो तुरन्त समझ गयी कि वह हार चुकी है।

उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को हुकुम दिया कि उसका पहला हुकुम रद्द किया जाता है और वे लोग जा सकते हैं।

दोनों की शादी हो गयी और वे आनन्दपूर्वक रहने लगे।

12 एक राजा और सेब[53]

पहेली बूझने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं से ले गयी है।

एक बार की बात है कि या तो था और या फिर बिल्कुल ही नहीं था एक राजा रहा करता था। वह बहुत बूढ़ा हो गया था और उसकी मौत का समय पास आ गया था।

सो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "लो बेटा यह सन्दूकची तुम अपने पास रखो। जिस दिन तुम शिकार के लिये पूर्व की तरफ जाओ और बहुत परेशानी में हो तब इसे खोलना।"

यह कह कर राजा मर गया। उसको जिस तरह वह चाहता था उसी तरह से दफ़ना दिया गया। पिता की मौत के बाद राजकुमार बहुत दुखी हो गया और इतना दुखी हो गया कि उसने घर से बाहर ही निकलना बन्द कर दिया।

आखिर राज्य के मन्त्री लोग अपने नये राजा के पास आये और उसको सलाह दी कि उसको शिकार के लिये जाना चाहिये ऐसे घर में बैठे रहने से कैसे काम चलेगा।

[53] The King and the Apple (Tale No 16) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

राजा को यह विचार अच्छा लगा और वह शिकार के लिये चल दिया। वे लोग पूर्व की तरफ गये और उन्होंने बहुत सारे शिकार मारे।

जब वे लोग लौट रहे थे तो नौजवान राजा ने सड़क के पास एक मीनार देखी। उसको देख कर उसने यह इच्छा प्रगट की कि वह उसमें जा कर देखे कि उसमें क्या है।

उसने अपने एक मन्त्री से कहा कि वह उसके अन्दर जाये और जा कर देखे कि उसके अन्दर क्या है। उसने राजा का हुकुम माना पर कहा — "मुझे लगता है कि मैं इसमें से तीन दिनों में वापस आ जाऊँगा और अगर मैं न आऊँ तो समझियेगा कि मैं मर गया।"

तीन दिन बीत गये। मन्त्री नहीं लौटा। राजा ने दूसरा मन्त्री भेजा फिर तीसरा मन्त्री भेजा फिर चौथा मन्त्री भेजा पर चारों में से कोई भी मन्त्री वापस लौट कर नहीं आया। तब वह खुद उठा और उसमें अन्दर जाने के लिये तैयार हुआ।

जब वह दरवाजे के पास पहुँचा तो उसने देखा कि दरवाजे के ऊपर लिखा था "तुम घुसोगे तो तुम पछताओगे। और नहीं घुसोगे तो तुम पछताओगे।"

राजा ने सोचा "तो मुझे कुछ न कुछ तो करना ही है। मैं घुसूँ या फिर न घुसूँ। मैं घुस कर भी पछताऊँगा और बिना घुसे भी। तो फिर मैं घुस कर ही क्यों न पछताऊँ।" उसने दरवाजा खोला और उसके अन्दर घुस गया।

लो वहॉ तो बारह आदमी नंगी तलवारें हाथ में लिये खड़े थे। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और उसको बारह कमरों में से निकाल कर ले गये।

जब वह बारहवें कमरे में आया तो उसने वहॉ एक सोने का काउच देखा जिस पर एक आठ नौ साल की उम्र का लड़का लेटा हुआ था। उसकी ऑखें बन्द थीं और वह एक शब्द भी नहीं बोला।

राजा को बताया गया कि वह लड़का उससे तीन सवाल पूछेगा और अगर वह उन सवालों को नहीं समझता और सब सवालों के जवाब नहीं देता तो तुम्हारा सिर कटवा दिया जायेगा।

यह सुन कर तो राजा बहुत दुखी हो गया कि वह अब क्या करे। पर फिर उसको अपने पिता की दी हुई सन्दूकची का ध्यान आया। उसने सोचा "इससे ज़्यादा मेरी बदकिस्मती क्या होगी कि मुझे मरना पड़ रहा है।"

सो उसने सन्दूकची निकाली और उसे खोला। खोलते ही उसमें से एक सेब निकल कर नीचे गिर पड़ा। गिर कर वह काउच की तरफ लुढ़क गया। राजा ने सोचा "यह मेरी क्या सहायता करेगा।"

वह यह सोच ही रहा था कि सेब बोलने लगा। उसने लड़के को नीचे लिखी हुई कहानी सुनायी —

"एक आदमी अपनी पत्नी और भाई के साथ यात्रा कर रहा था। चलते चलते उनको रात हो गयी। उनके पास खाना भी नहीं

था। सो भाई पास के गॉव में डबल रोटी खरीदने गया। रास्ते में उसको डाकू मिल गये जिन्होंने उसे लूट लिया और उसका सिर काट दिया।

जब आदमी ने देखा कि उसका भाई लौट कर नहीं आया तो वह उसको देखने गया। उसका भी वही हाल हुआ जो उसके भाई का हुआ था। अगले दिन वह दुखी स्त्री उनको देखने गयी। बीच रास्ते में उसने अपने पति और उसके भाई की लाशें पड़ी देखीं जिनका सिर नहीं था।

पास में ही उनके सिर पड़े थे। उनके चारों तरफ खून बिखरा पड़ा था। वह स्त्री बेचारी वहीं बैठ गयी। वह अपने बाल नोचने लगी और उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

तभी वहॉ एक छोटा सा चूहा आया और उसने खून चाटना शुरू कर दिया। इस पर स्त्री ने एक पत्थर उठाया उसको चूहे पर दे मारा जिससे चूहा मर गया।

अब चूहे की मॉ बाहर आयी और बोली — "मेरी तरफ देख। मैं तो अपने बच्चे को ज़िन्दा कर सकती हूँ पर तू अपने पति और उसके भाई के लिये क्या कर सकती है।" कह कर उसने एक जड़ी बूटी उखाड़ी और उसे चूहे के शरीर पर मल दिया और लो वह चूहा तो ज़िन्दा हो गया। बस फिर वे दोनों अपने बिल में घुस गये।

यह देख कर वह स्त्री तो बहुत खुश हो गयी। उसने भी वही जड़ी बूटी तोड़ी अपने पति और उसके भाई के सिर उनके धड़ से

जोड़े और वह जड़ी बूटी उनके ऊपर लगा दी। उसका पति और उसके पति का भाई दोनों ज़िन्दा हो गये। पर उससे एक गलती हो गयी। उसने वे सिर गलत शरीरों पर लगा दिये।

अब मेरे नौजवान बेटे तुम यह बताओ कि उस स्त्री का पति कौन सा था।" कह कर सेब ने अपनी कहानी खत्म की।

लड़के ने अपनी ऑखें खोलीं और कहा — "निश्चित रूप से वही जिसके शरीर पर ठीक सिर था।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

सेब फिर बोला — "एक बार एक मिलाने वाला[54] एक दरजी और एक पादरी एक साथ कहीं जा रहे थे। चलते चलते उनको जंगल में रात हो गयी सो उन्होंने एक बहुत बड़ी आग जलायी खाना खाया फिर बोले — "हमको नौकरी दिलवा दीजिये। हममें से हर एक बारी बारी से पहरा देगा और अपने अपने काम में कुछ न कुछ करेगा।"

मिलाने वाले की बारी पहली थी सो उसने एक पेड़ काटा और उसकी लकड़ी से एक आदमी बनाया। फिर वह लेट गया और सो गया। अब दरजी की पहरा देने की बारी आयी। तो उसने एक आदमी की मूर्ति देखी तो उसने अपने कपड़े उतारे और उसको पहना दिये।

[54] Translated for the word "Joiner"

दरजी के बाद अब पादरी की पहरा देने की बारी थी। जब उसने एक आदमी कपड़े पहने हुए देखा तो उसने भगवान से प्रार्थना की वह उसमें आत्मा डाल दे। उसने प्रार्थना की और भगवान ने उसकी इच्छा पूरी की।

अब यह बताओ मेरे बच्चे कि उस आदमी को किसने बनाया?"

"जिसने उसमें आत्मा डाली।" लड़के ने जवाब दिया।

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने मन में सोचा "ये दो सवाल हो गये।"

सेब फिर बोला — "एक बार एक ज्योतिषी था एक डाक्टर था और एक तेज़ भागने वाला था। ज्योतिषी बोला — "एक जगह एक राजकुमार है जो फलॉ फलॉ बीमारी से बीमार है।"

डाक्टर बोला — "मैं जानता हूँ कि उसका इलाज क्या है।"

तो तेज़ भागने वाला बोला — "मैं उस दवा को वहॉ जल्दी से जल्दी ले जा सकता हूँ।"

सो डाक्टर ने उसके लिये दवा तैयार की और वह तेज़ भागने वाला उस दवा को ले कर वहॉ भाग गया। और राजकुमार ठीक हो गया।

अब यह बताओ कि राजकुमार को किसने ठीक किया – ज्योतिषी ने जिसने राजकुमार के बारे में बताया या फिर डाक्टर ने जिसने दवा तैयार की या फिर उस आदमी ने जो दवा ले कर भाग कर गया।"

लड़का बोला — "जिसने दवा तैयार की।"

जब लड़के ने तीनों के जवाब दे दिये तो सेब फिर से अपनी सन्दूकची में जा कर बैठ गया। और राजा ने वह सन्दूकची अपनी जेब में रख ली।

लड़का उठा उसने राजा को गले लगाया और बोला — "यहाँ बहुत लोग आये पर इससे पहले मैं बोल नहीं सका। अब तुम मुझे अपनी इच्छा बताओ कि तुम्हारी क्या इच्छा है मैं वही पूरी करूँगा।"

राजा ने कहा कि उसके मन्त्री जो मर चुके थे उनको ज़िन्दा कर दिया जाये।

लड़के ने वैसा ही किया। सब लोग बहुत सारी भेंटें ले कर अपने घर वापस गये।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html
19 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2018/12/2.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर **2018**